SOOD AUR USKA ILAZ (HINDI)

येह रिसाला सूद, इस की नुहूसतों और इस से बचने के तरीक़ों पर मुश्तमिल है।

सूद और उस का इलाज

क़र्ज़ देने का सवाब 8
क़र्ज़ पर नफ़्अ़ लेना सूद है 11
सूद से पागल पन फैलता है 16
आह ! सूद ही सूद 22
ब-र-कत और कसरत में फ़र्क़ 37
बरोज़े क़ियामत सूदख़ोर की ह़ालत 42
सुद का इलाज 49
सूद से बचने की सूरतें 76

مکتبۃ المدینہ (دعوت اسلامی)

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जै़ल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ***ऐ अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले***

(المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि

सूद और उस का इलाज

येह किताब (**सूद और उस का इलाज**)

मजलिसे अल मदी–नतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त् में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई–मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक–त–बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।

MO. 09374031409

E-mail : maktabahind@gmail.com

पेशकश: मर्कज़ी मजलिसे शूरा

याद दाश्त

दौराने मुत़ा–लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

येह रिसाला सूद, इस की नुहूसतों और इस से बचने के त़रीक़ों पर मुश्तमिल है ।

सूद और उस का इलाज

पेशकश

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद ।

याद दाश्त

दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

याद दाश्त

दौराने मुत़ा–लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہِ

नाम बयान : सूद और उस का इ़लाज

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल ग़ौस शरीफ़ 1432

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा-1,अह़मदआबाद, गुजरात,
फ़ोन : 079-25391168

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

मुम्बई : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई
फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C/0) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास
मोमिनपुरा नागपूर फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद. नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : 0145 2629385

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"सूद और उस का इलाज" के 14 हुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की "14 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ

मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الكبير، الحديث: 5942، ج6، ص185)

दो म-दनी फूल :

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बाह ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) (5) रिज़ाए इलाही के लिये इस रिसाले का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा। (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा (8) क़ुरआनी आयात और (9) अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा (10) जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा (11) दूसरों को येह रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (12) इस ह़दीसे पाक "**تَهَادَوْا تَحَابُّوْا**" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالك، الحديث: ۱۷۳۱، ج۲، ص۲۰۷) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह रिसाला ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा (13) इस रिसाले का मुत़ा-लआ़ कर के ख़ुद भी सूद से बचूंगा और दूसरों को भी इस ला'नत से बचाने की कोशिश करूंगा। (14) किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा (नाशिरीन को किताबों की अ़ग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)। (اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सूद और उस का इलाज[1]

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत :

एक शख़्स ने ख़्वाब में एक ख़ौफ़नाक शक्ल देखी, घबरा कर पूछा : "तू कौन है ?" तो उस ने जवाब दिया : "मैं तेरे बुरे आ'माल हूं।" पूछा : "तुझ से नजात की क्या सूरत है ?" तो उस ने जवाब दिया : "दुरूदे पाक की कसरत।"[2]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1) येह रिसाला मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी سَلَّمَہُ الْبَارِی के दो बयानात : "सूद की नुहूसत" और "सूद और इस से बचने के त़रीक़े" का मज्मूआ़ है। जो ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के साथ पेश किया जा रहा है।

(2) اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع، الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ۔۔۔الخ، ص ۲۵۵.

ख़ून का दरिया :

साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : “मैं ने शबे मे'राज देखा कि दो शख़्स मुझे अर्ज़े मुक़द्दस (या'नी बैतुल मुक़द्दस) ले गए, फिर हम आगे चल दिये यहां तक कि ख़ून के एक दरिया पर पहुंचे जिस में एक शख़्स खड़ा हुवा था और दरिया के कनारे पर दूसरा शख़्स खड़ा था जिस के सामने पथ्थर रखे हुए थे, दरिया में मौजूद शख़्स जब भी बाहर निकलने का इरादा करता तो कनारे पर खड़ा शख़्स एक पथ्थर उस के मुंह पर मार कर उसे उस की जगह लौटा देता, इसी त़रह़ होता रहा कि जब भी वोह (दरिया वाला) शख़्स कनारे पर आने का इरादा करता तो दूसरा शख़्स उस के मुंह पर पथ्थर मार कर उसे वापस लौटा देता, मैं ने पूछा : “येह दरिया में कोन है ?” जवाब मिला : **“येह सूद खाने वाला है ।”**[1]

भयानक बीमारी :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना जहां हमारा मुआ़-शरा बे शुमार बुराइयों में मुब्तला है, वहीं एक अहम तरीन बुराई हमारे मुआ़-शरे में बड़ी तेज़ी के साथ परवान चढ़ रही है, वोह येह है कि अब किसी ह़ाजत मन्द को बिग़ैर सूद (Interest) के क़र्ज़ (Loan) मिलना

مـــــــدینــــہ

(۱)صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب اکل الربا و شاھدہ و کاتبہ، الحدیث:۲۰۸۵، ج۲، ص۱۴.

मुश्किल हो गया है। लिहाज़ा आइये इस भयानक बीमारी के बारे में जानते हैं जो एक वबा की त़रह़ हमारे मुआ़-शरे में फैलती चली जा रही है। ह़ालां कि क़र्ज़ देने के बे शुमार फ़ज़ाइल मरवी हैं। चुनान्चे,

तीन ख़ुश नसीब बन्दे

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन त़रह़ के मोमिन बन्दों को इजाज़त होगी कि वोह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहें दाख़िल हो जाएं और जो ने'मत चाहें इख़्तियार करें : (1).... मक़्तूल के वु-रसा, जो क़ातिल का ख़ून मुआ़फ़ कर दें। (2).... जो ह़ाजत मन्दों को क़र्ज़ दें। (3).... और जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस बार قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَد शरीफ़ पढ़ा करें।"(1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक में तीन ख़ुश नसीब बन्दों का तज़्किरा है जिन में एक वोह भी है जो ह़ाजत मन्दों को क़र्ज़ देता है। क्यूं कि जो किसी मोह़ताज को क़र्ज़ देता है बरोज़े क़ियामत उसे अज्रो सवाब का पैमाना भर भर कर दिया जाएगा। मगर **अफ़्सोस !** हमारे यहां क़र्ज़ तो दिया जाता है मगर सूद पर, और आख़िरत का सवाब नहीं देखा जाता ह़ालां कि क़र्ज़ देना किस क़दर सवाब का बाइ़स है इस को इस ह़दीसे पाक से समझिये :

م ـــــــ مدينه

(١) مسند ابی یعلی، مسند جابر بن عبد الله، الحدیث 1788، ج 2، ص 196، بتغیر قلیل.

क़र्ज़ देने का सवाब :

ह़ज़रते **अब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हर क़र्ज़ स-दक़ा है।''(1)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने शबे मे'राज जन्नत के दरवाज़े पर लिखा हुवा देखा कि स-दक़े का सवाब दस गुना और क़र्ज़ देने का सवाब अठ्ठारह गुना है। चुनान्चे, मैं ने जिब्राईल से इस बारे में पूछा कि क़र्ज़ के स-दक़ा से अफ़्ज़ल होने की क्या वजह है? तो उन्हों ने बताया कि (स-दक़ा तो) वोह भी मांग लेता है जो मोह़ताज न हो मगर क़र्ज़ मांगने वाला ह़ाजत व ज़रूरत के बिग़ैर क़र्ज़ नहीं मांगता।(2)

मक़्रूज़ पर नरमी से बख़्शिश हो गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''एक शख़्स ने कभी कोई नेक काम न किया था, हां अलबत्ता ! वोह लोगों को क़र्ज़ दिया करता और अपने नोकरों से कहा करता कि **मक़्रूज़ ख़ुशह़ाल हो तो उस से क़र्ज़ ले लेना और अगर तंगदस्त हो तो मत लेना** (बल्कि दर गुज़र करना और मज़ीद

(۱) المعجم الاوسط، الحدیث: 3498، ج2، ص345

(۲) سنن ابن ماجه، کتاب الصدقات، باب القرض، الحدیث: 2431، ج3، ص154

मोहलत दे देना) । ऐ काश ! हमारा रब عَزَّوَجَلَّ भी हम से दर गुज़र फ़रमाए ।" चुनान्चे, जब उस ने जहाने फ़ानी से कूच किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तूने कभी कोई नेकी भी की ?" उस ने अ़र्ज़ की : "नहीं, हां अलबत्ता ! मैं लोगों को क़र्ज़ दिया करता था और जब अपने ख़ादिम को क़र्ज़ की वुसूली के लिये भेजता तो उसे कहा करता था कि खुशहाल से तो ले लेना मगर तंगदस्त से मत लेना बल्कि दर गुज़र करना, हो सकता है कि (इसी के सबब) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम से भी दर गुज़र फ़रमाए ।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "(जाओ !) **मैं ने तुम्हें बख़्श दिया ।**"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! क़र्ज़ देने और ह़ाजत मन्द और तंगदस्त पर रह़्म व शफ़्क़त की किस क़दर ब-र-कत ज़ाहिर हुई । हमारे अस्लाफ़ ब कसरत क़र्ज़ देने के साथ साथ ह़ाजत मन्द और तंगदस्त पर रह़्म और अ़फ़्वो दर गुज़र का मुआ़-मला भी किया करते थे । चुनान्चे,

सारा क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया :

ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ जा रहा था कि एक शख़्स आप को देख कर छुप गया और दूसरा रास्ता इख़्तियार किया । जब आप को मा'लूम हुवा तो आप ने उसे पुकारा, वोह आया तो पूछा कि तुम ने रास्ता क्यूं बदल दिया ? और क्यूं छुप गए ? उस ने

مــــــدینــــہ

(١) المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرہ، الحدیث:٨٧٣٨، ج3، ص285

अ़र्ज़ की : **''मैं आप का मक़्रूज़ हूं, मैं ने आप को दस हज़ार दिरहम देने हैं जिस को काफ़ी अ़र्सा गुज़र चुका है और मैं तंगदस्त हूं, आप से शरमाता हूं ।'' इमामे आ'ज़म** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم **ने फ़रमाया : ''**سُبْحٰنَ اللہ **! मेरी वजह से तुम्हारी येह ह़ालत है, जाओ ! मैं ने सारा क़र्ज़ तुम्हें मुआ़फ़ कर दिया ।** और मैं ने अपने आप को अपने नफ़्स पर गवाह किया । अब आइन्दा मुझ से न छुपना । और सुनो जो ख़ौफ़ तुम्हारे दिल में मेरी वजह से पैदा हुवा मुझे वोह भी मुआ़फ़ कर दो ।''[1]

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! कुरबान जाइये सय्यिदुना इमामे आ'ज़म इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मुबारक सीरत पर, किस क़दर तंगदस्त पर शफ़्क़त फ़रमाई और न सिर्फ़ अपना क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया बल्कि उस के दिल में जो ख़ौफ़ पैदा हुवा उस पर भी कमाल द-रजे की आ़जिज़ी व इन्किसारी का मुज़ा-हरा करते हुए मुआ़फ़ी त़लब कर रहे हैं ।

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना इमामे आ'ज़म इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का तक़्वा कमाल द-रजे का था । आप ह़ाजत मन्दों को न सिर्फ़ क़र्ज़ दिया करते बल्कि दर गुज़र से भी काम लिया करते । और क़र्ज़ पर किसी क़िस्म का नफ़्अ़ लेने से हमेशा ख़ौफ़ज़दा रहते कि कहीं सूद में मुब्तला न हो जाऊं, सय्यिदुना इमामे आ'ज़म इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सूद तो सूद, सूद के शुबुहात से भी अपने तक़्वा के सबब बचा करते थे । चुनान्चे,

مـــــدینـــــہ

(۱) مناقب الامام الاعظم ابی حنیفه رحمة الله تعالیٰ علیه، ج1، الجزء الاول، ص260

सूद के शुबुहात से बचना :

सय्यिदुना इमामे आ'ज़म इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه एक जनाज़ा पढ़ने तशरीफ़ ले गए, धूप की बड़ी शिद्दत थी और वहां कोई साया न था, साथ ही एक शख़्स का मकान था, जिस की दीवार का साया देख कर लोगों ने सय्यिदुना इमामे आ'ज़म इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه से अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर ! इस मकान के साए में खड़े हो जाइये । मेरे आक़ा इमामे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने इर्शाद फ़रमाया कि **इस मकान का मालिक मेरा मक़रूज़ है और अगर मैं ने इस की दीवार से कुछ नफ़्अ़ ह़ासिल किया तो मैं डरता हूं कि अल्लाह के नज़्दीक कहीं सूद लेने वालों में शुमार न हो जाऊं** । क्यूं कि मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "जिस क़र्ज़ से कुछ नफ़्अ़ लिया जाए वोह सूद है ।" चुनान्चे, आप धूप ही में खड़े रहे ।[1]

क़र्ज़ पर नफ़्अ़ लेना सूद है :

फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना अश्शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن क़र्ज़ पर नफ़्अ़ लेने के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "**क़र्ज़ देने वाले को क़र्ज़ पर जो नफ़्अ़ व फ़ाएदा ह़ासिल हो वोह सब सूद और निरा ह़राम है** । ह़दीस में है **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

مـــــــــــــــــــــــدینــــــــه

(۱)تذکرۃ الاولیاء، ص188

"كُلُّ قَرْضٍ جَرَّ مَنْفَعَةً فَهُوَ رِباً" क़र्ज़ से जो फ़ाएदा हासिल किया जाए वोह सूद है।"(1)

क़ुरआने करीम में सूद की हुरमत का बयान

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सूद क़त्ई हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। इस की हुरमत का मुन्किर काफ़िर और जो हराम समझ कर इस बीमारी में मुब्तला हो वोह फ़ासिक़ और मरदूदुश्शहादह है। (या'नी उस की गवाही क़बूल नहीं की जाती) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक में इस की भरपूर मज़म्मत फ़रमाई है। चुनान्चे, सूरए ब-क़रह की आयत नम्बर 275 ता 278 में है :

اَلَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا یَقُوْمُوْنَ
اِلَّا كَمَا یَقُوْمُ الَّذِیْ یَتَخَبَّطُهُ
الشَّیْطٰنُ مِنَ الْمَسِّؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَالُوْۤا اِنَّمَا الْبَیْعُ مِثْلُ الرِّبٰواۘ
وَ اَحَلَّ اللّٰهُ الْبَیْعَ وَ حَرَّمَ الرِّبٰواؕ
فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ
فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَؕ وَ اَمْرُهٗۤ
اِلَى اللّٰهِؕ وَ مَنْ عَادَ فَاُولٰٓىِٕكَ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो सूद खाते हैं क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने छू कर मख़्बूत बना दिया हो येह इस लिये कि उन्हों ने कहा बैअ़ भी तो सूद ही के मानिन्द है और **अल्लाह** ने हलाल किया बैअ़ को और हराम किया सूद तो जिसे उस के रब के पास से नसीहत आई और वोह बाज़ रहा तो उसे हलाल है जो पहले ले चुका

(1) फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 17, स. 713

اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۲۷۵﴾ يَمۡحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرۡبِى الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيۡمٍ ﴿۲۷۶﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمۡ اَجۡرُهُمۡ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ۚ وَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿۲۷۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوۡا مَا بَقِىَ مِنَ الرِّبٰۤوا اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۲۷۸﴾

(پ۳، البقرۃ: 275تا278)

और उस का काम ख़ुदा के सिपुर्द है और जो अब ऐसी ह़-र-कत करेगा तो वोह दोज़ख़ी है वोह उस में मुद्दतों रहेंगे । **अल्लाह** हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को और **अल्लाह** को पसन्द नहीं आता कोई ना शुक्रा बड़ा गुनहगार । बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात दी उन का नेग उन के रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म । ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद अगर मुसल्मान हो ।

शाने नुज़ूल :

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِى **''ख़ज़ाइनुल इरफ़ान''** में इस आयते करीमा के शाने नुज़ूल के बारे में कुछ यूं फ़रमाते हैं : ''येह आयत उन अस्ह़ाब के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सूद की ह़ुरमत नाज़िल होने से क़ब्ल सूदी लैन दैन करते थे और उन की गिरां क़द्र सूदी रक़में दूसरों के ज़िम्मे बाक़ी थीं, उस में

हुक्म दिया गया कि सूद की हुरमत नाज़िल होने के बा'द साबिक़ के मुत़ा-लबे भी वाजिबुत्तर्क हैं और पहला मुक़र्रर किया हुवा सूद भी अब लेना जाइज़ नहीं।''[1]

इस के बा'द **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** इर्शाद फ़रमाता है :

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَ اِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۹﴾ (پ3، البقرۃ: 279)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन कर लो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल से लड़ाई का और अगर तुम तौबा करो तो अपना अस्ल माल ले लो न तुम किसी को नुक़्सान पहुंचाओ न तुम्हें नुक़्सान हो।

तफ़्सीर :

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयते मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : ''येह वई़द व तह़्दीद में मुबा-लग़ा व तश्दीद है। (या'नी) किस की मजाल कि **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ाई का तसव्वुर भी करे। चुनान्चे, उन अस्ह़ाब ने अपने सूदी मुत़ा-लबे छोड़े और येह अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ाई की हमें क्या ताब ? और ताइब हुए।''[2]

(۱) خزائن العرفان، پ3، البقرۃ: تحت الاية 278

(۲) المرجع السابق، تحت الاية 279

अहादीसे मुबा-रका में सूद की हुरमत

कसीर अहादीसे मुबा–रका में सूद की भरपूर मज़म्मत फ़रमाई गई है। चुनान्चे,

हलाकत ख़ैज़ सात चीज़ें :

शहन्शाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "सात चीज़ों से बचो जो कि तबाह व बरबाद करने वाली हैं।" सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : **"या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह सात चीज़ें क्या हैं ?" इर्शाद फ़रमाया : "﴾1﴿ शिर्क करना ﴾2﴿ जादू करना ﴾3﴿ उसे नाहक़ क़त्ल करना कि जिस का क़त्ल करना **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हराम किया ﴾4﴿ **सूद खाना** ﴾5﴿ यतीम का माल खाना ﴾6﴿ जंग के दौरान मुक़ाबले के वक़्त पीठ फैर कर भाग जाना ﴾7﴿ और पाक दामन, शादी शुदा मोमिन औ़रतों पर तोहमत लगाना।"(1)

सूद से सारी बस्ती हलाक हो जाती है :

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि **जब किसी बस्ती में ज़िना और सूद फैल जाए तो अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **उस बस्ती वालों को हलाक करने की इजाज़त दे देता है।**(2)

مـــــــــدينـــه

(۱)صحیح البخاری، کتاب الوصایا، باب قول اللّٰہ تعالٰی ان الذین یاکلون اموال الیتمی۔۔الایۃ، الحدیث:2766، ج2،ص242

(۲)کتاب الکبائر للذھبی، الکبیرۃ الثانیۃ عشرۃ، ص69

सूद से पागल पन फैलता है :

नबियों के सुल्तान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **"जिस क़ौम में सूद फैलता है उस क़ौम में पागल पन फैलता है ।"**(1)

सूदख़ोर के पेट में सांप :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मेरे आक़ा, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि शबे मे'राज मैं एक ऐसी क़ौम के पास से गुज़रा, जिन के पेट कमरों की तरह (बड़े बड़े) थे, जिन में सांप पेटों के बाहर से देखे जा रहे थे । मैं ने जिब्राईल से पूछा : "येह कौन लोग हैं ?" उन्हों ने अर्ज़ की : **"येह सूदख़ोर हैं ।"**(2)

आह ! सद करोड़ आह ! आज हमारे पेट में अगर मा'मूली सा कीड़ा चला जाए, तो तबीअत में भौंचाल आ जाता है । क़ियामत का येह सख़्त अज़ाब कैसे बरदाश्त करेंगे ? सूद खाने वाले लोगों के पेट इतने बड़े होंगे जैसा कि किसी मकान के कमरे हों । उन में सांप और बिच्छू वग़ैरा होंगे । किस क़दर भयानक अज़ाब है । **अल्लाह तबा-र-क व तआला** हम सब को सूद की आफ़त से महफ़ूज़ फ़रमाए ।

मदीना

(۱) کتاب الکبائر للذہبی، الکبیرۃ الثانیۃ عشرۃ، ص70

(۲) سنن ابن ماجہ، کتاب التجارات، باب التغلیظ فی الربا، الحدیث: ۲۲۷۳، ج۳، ص۷۲

सूदी कारोबार में शिर्कत बाइसे ला'नत है :

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, **मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **सूद खाने वाले, खिलाने वाले, इस की तहरीर लिखने वाले और इस के गवाहों पर ला'नत की** और फ़रमाया कि येह सब (गुनाह में) बराबर हैं ।(1)

ऐ सूदी खाते लिखने और सूद पर गवाह बनने वालो ! देखो किस क़दर वईद मरवी है।

सूद खाना जैसे अपनी मां से ज़िना करना :

मक्की म–दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''बेशक **सूद के** 72 **दरवाज़े हैं, इन में से कम तरीन ऐसे है जो कोई मर्द अपनी मां से ज़िना करे ।**''(2)

एक रिवायत में सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **''सूद के** 70 **दरवाज़े हैं,** इन में से कमतर ऐसा है जैसे कोई मर्द अपनी मां से ज़िना करे ।''(3)

مــــــــــــــــــــــــــــــدینــــہ

(۱)صحیح مسلم، کتاب المساقات، باب لعن آکل الربا و موکلہ، الحدیث:1598، ص862

(۲)المعجم الاوسط، الحدیث: ۷۱۵۱، ج۵، ص۲۲۷

(۳)شعب الایمان، الحدیث: ۵۵۲۰، ج۴، ص۳۹۴

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़तावा र-ज़विय्या जि. 17, स. 307 पर इस ह़दीसे पाक को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं : ''तो जो शख़्स सूद का एक पैसा लेना चाहे अगर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद मानता है तो ज़रा गरीबान में मुंह डाल कर पहले सोच ले कि इस पैसे का न मिलना क़बूल है या अपनी मां से सत्तर सत्तर (70) बार ज़िना करना। **सूद लेना ह़रामे क़त़्ई़ व कबीरा व अ़ज़ीमा है जिस का लेना किसी त़रह़ रवा नहीं।**''(1)

ना आ़क़िबत अन्देश लोग :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस पुर फ़ितन दौर में बा'ज़ अफ़राद सूद (Interest) के बारे में बहुत कलाम करते हैं और त़रह़ त़रह़ से सूदी मुआ़-मलात में राहें निकालने की कोशिश करते हैं, कभी कहते हैं कि सूद की इतनी सख़्त रिवायात और वई़दों की क्या ह़िक्मत है ? कभी कहते हैं अगर सूदी कारोबार बन्द कर देंगे तो बैनल अक़्वामी मन्डी (International Market) में मुक़ाबला कैसे कर सकेंगे ? कभी कहते हैं दूसरी क़ौमों से पीछे रह जाएंगे। और कभी इन्तिहाई कम शर्ह़े सूद (Interest rate) की आड़ ले कर लोगों को उक्साते हैं, त़रह़ त़रह़ की बद तरीन राहें खोलने की कोशिश करते हैं।

(1) फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 17, स. 307

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़** में इसी क़िस्म के एक सुवाल का जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ''काफ़िरों ने ए'तिराज़ किया था : ﴿اِنَّمَا الْبَیْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا﴾ बेशक बैअ़ भी तो सूद की मिस्ल है। **तुम जो ख़रीद व फ़रोख़्त को ह़लाल और सूद को ह़राम करते हो इन में क्या फ़र्क़ है ?** बैअ़ में भी तो नफ़्अ़ लेना होता है।''

येह ए'तिराज़ नक़्ल करने के बा'द आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नक़्ल किया : ﴿وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَیْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا﴾ या'नी **अल्लाह** ने ह़लाल की बैअ़ और ह़राम किया सूद। और फिर इर्शाद फ़रमाया : **''तुम होते हो कौन ? बन्दे हो, सरे बन्दगी ख़म करो।** हुक्म सब को दिये जाते हैं, ह़िक्मतें बताने के लिये सब नहीं होते, आज दुन्या भर के मुमालिक में किसी की मजाल है कि क़ानूने मुल्की की किसी दफ़्आ़ पर ह़र्फ़ गीरी करे कि येह बे जा है, येह क्यूं है ? यूं न होना चाहिये, यूं होना चाहिये। **जब झूटी फ़ानी मजाज़ी सल्त़नतों के सामने चूनो चरा की मजाल नहीं होती तो उस मलिकुल मुलूक, बादशाहे ह़क़ीक़ी, अ-ज़ली, अ-बदी के ह़ुज़ूर क्यूं और किस लिये, का दम भरना कैसी सख़्त नादानी है।''**(1)

और जो इन अह़कामात को क़ैदो बन्द से ता'बीर करता है कि येह कैसी क़ुयूद हम पर लाज़िम कर दी गईं ? उसे आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت समझा रहे हैं : **''जो आज बे क़ैदी चाहे कल निहायत**

(1) फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 17, स. 359

सख़्त क़ैद में शदीद क़ैद में गरिफ़्तार होगा । और जो आज अह़काम का मुक़य्यद रहे कल बड़े चैन की आज़ादी पाएगा ।''

इस के बा'द इर्शाद फ़रमाते हैं कि **दुन्या मुसल्मान के लिये क़ैदख़ाना है, काफ़िर के लिये जन्नत, मुसल्मानों से किस ने कहा कि काफ़िरों की अम्वाल की वुस्अ़त और त़रीक़े तह़सीले आज़ादी और कसरत की त़रफ़ निगाह फाड़ कर देखे ।** ऐ मिस्कीन ! तुझे तो कल का दिन संवारना है :

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّ لَا بَنُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۹﴾

(پ19، الشعراء:88،89)

जिस दिन न माल नफ़्अ़ देगा न औलाद, मगर जो **अल्लाह** के हुज़ूर सलामती वाले दिल के साथ ह़ाज़िर हुवा ।

ऐ मिस्कीन ! तेरे रब ने पहले ही तुझे फ़रमा दिया है :

وَ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۙ۬ لِنَفْتِنَهُمْ فِیْهِ ؕ وَ رِزْقُ رَبِّكَ خَیْرٌ وَّ اَبْقٰى ﴿۱۳۱﴾

(پ16، طٰہٰ:131)

अपनी आंख उठा कर न देख उस दुन्यावी ज़िन्दगी की त़रफ़ जो हम ने काफ़िरों के कुछ मर्दों व औ़रतों के बरतने को दी ताकि वोह इस के फ़ितने में पड़े रहें और हमारी याद से ग़ाफ़िल हों और तेरे रब का रिज़्क़ बेहतर है और बाक़ी रहने वाला ।[1]

(1) फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 17, स. 360

अस्लाफ़ का अन्दाज़े ह़यात :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़ के अन्दाज़े ह़यात की कुछ झलक मुला–ह़ज़ा कीजिये कि किस त़रह़ दुन्यावी ऐशो आराइश से दूर रह कर आख़िरत को बेहतर बनाने वाली ज़िन्दगी गुज़ारते थे। चुनान्चे,

बा रौनक़ घर देख कर रो पड़े :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुत़ीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ السَّمِيْع ने एक दिन अपने बा रौनक़ घर को देखा तो ख़ुश हो गए मगर फिर फ़ौरन रोना शुरूअ़ कर दिया और फ़रमाया : ''ऐ ख़ूब सूरत मकान ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! अगर मौत न होती तो मैं तुझ से ख़ुश होता और अगर आख़िर कार तंग क़ब्र में जाना न होता तो दुन्या और इस की रंगीनियों से मेरी आंखें ठन्डी होतीं।'' येह फ़रमाने के बा'द इस क़दर रोए कि हिचकियां बंध गईं।[1]

दुन्या आख़िरत की तय्यारी के लिये मख़्सूस है :

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जो सब से आख़िरी ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया उस में येह भी है : ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने तुम्हें दुन्या मह़्ज़ इस लिये अ़त़ा फ़रमाई है कि तुम इस के ज़रीए़ आख़िरत की तय्यारी करो और इस लिये अ़त़ा नहीं फ़रमाई कि तुम इसी के हो कर रह जाओ,

مـــــدينـــه

(۱)اِتحَافُ السَّادَةِ الْمُتَّقِيْن، كتاب ذكر الموت ومابعده، الباب الاول فی ذكر الموت، ج14، ص32

बेशक दुन्या महज़ फ़ानी और आख़िरत बाक़ी है। तुम्हें फ़ानी (दुन्या) कहीं बहका कर बाक़ी (आख़िरत) से ग़ाफ़िल न कर दे, फ़ना हो जाने वाली दुन्या को बाक़ी रहने वाली आख़िरत पर तरजीह़ न दो क्यूं कि दुन्या मुन्क़तेअ़ होने वाली है और बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लौटना है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो क्यूं कि उस का डर उस के अ़ज़ाब के लिये (रोक और) ढाल और उस तक पहुंचने का ज़रीआ़ है।"[1]

है येह दुन्या बे वफ़ा आख़िर फ़ना

न रहा इस में गदा न बादशाह

आह ! सूद ही सूद :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मान को येह ज़ैब नहीं देता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़-मले में चूनो चरा करे और कुफ़्फ़ार के माल की फ़रावानी देख कर अपने आप को ह़राम रोज़ी में मुब्तला करे, मगर **हाए अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज मुसल्मान बेबाकी के साथ गुनाहों की त़रफ़ बढ़ता चला जा रहा है। और दुन्या की ज़ैबो ज़ीनत में इस क़दर मुन्हमिक होता जा रहा है कि इसे इस बात की भी परवाह नहीं रही कि जो क़र्ज़** (Loan) **ले रहा है वोह सूद** (Interest) **पर मिल रहा है या बिग़ैर सूद** (Interest) **।**

مـــــــدینـــہ

(۱)شعب الایمان، کتاب فی الزھد و قصر الامل، الحدیث:10612 ج7، ص369

❁..... किसी का घर टूटा हुवा है, जेब में रक़म नहीं, परेशान है कि क्या करूं ? तो कोई मश्वरा देता है : ''अरे परेशान क्यूं होते हो ? बहुत से सूदी इदारे बने हुए हैं, तुम बात तो करो, बात करने की भी ह़ाजत नहीं, फ़ोन तो करो, तुम्हें घर बनाना है, क़र्ज़ (Loan) ले लो, वोह तुम्हें क़र्ज़ (Loan) दे देंगे, नतीजे में **सूद दे देना ।**''

❁..... अच्छा ! तुम्हारा बच्चा इस घर में ख़ुश नहीं हो रहा ? क्यूं परेशान हो रहे हो ? अपने बच्चे को मत रुलाओ ! इसे ख़ुश करो, येह घर बेच कर बंगला ले लो, कोई मस्अला नहीं, क़र्ज़ देने वाले इदारे बहुत हैं, बस क़र्ज़ ले लो, **सूद दे देना ।**

❁..... फ़ेक्टरी बनानी है ? पैदावार (Production) बढ़ानी है ? मज़ीद कारख़ाने लगाने हैं ? कारोबार को वुस्अ़त व तरक़्क़ी देनी है ? इन्वेस्ट मेन्ट (Investment) नहीं है ? सरमाया (Capital) कम पड़ गया है ? क्यूं परेशान हो रहे हो ? **सूदी इदारे बहुत, क़र्ज़ देने वाले इदारे बहुत, क़र्ज़ ले लो, सूद दे देना ।**

❁..... ''बेटी की शादी करना है ? क्यूं परेशान हो ?'' परेशान इस लिये हो रहा हूं कि सा-दगी से शादी तो कर लूंगा लेकिन येह रुसूमात (Customs, Traditions) येह ढोलक, येह मेहंदी, येह नाच गाना, येह बाजे, येह कई कई डिशों का खाना और फिर बहुत से लोगों को जम्अ़ कर के अपनी शोहरत चाहने की हवस । इस के लिये तो बहुत बड़ी

रक़म चाहिये। तो कोई मश्वरा देता है : **''क्यूं परेशान होते हो ? तुम भी अपनी बेटी की शादी कर लोगे, परेशान मत हो, क़र्ज़ देने वाले इदारे बहुत हैं, क़र्ज़ ले लो, सूद दे देना।''**

❁..... गाड़ी चाहिये ? पैसे नहीं हैं ? क्या परवाह है, क्यूं परेशान हो रहे हो ? क़र्ज़ ले लो, **सूद दे देना।**

❁..... मोटर साइकिल चाहिये ? क़र्ज़ ले लो, सूद दे देना। ट्रेक्टर चाहिये ? फ़स्लों के लिये माल चाहिये ?

इन तमाम चीज़ों के लिये पैसा चाहिये ? कोई मस्अला नहीं, इदारे बहुत हैं, क़र्ज़ देने वाले बहुत बढ़ गए हैं, आओ ! आओ ! मैं तुम्हें क़र्ज़ दिला देता हूं। हम पूछेंगे **: क्या यूंही क़र्ज़ मिल जाता है ? नहीं ! नहीं ! यूंही क़र्ज़ नहीं मिलेगा, सूद दे देना,** बस थोड़ा सा सूद ही तो देना है, कमा कमा कर सूद भरते जाना।

❁..... बिल्डिंग बनानी है ? क़र्ज़ ले लो, **सूद दे देना।**

❁..... **इम्पोर्ट** (Import) **एक्सपोर्ट** (Export) **बढ़ाना है ? कोई बात नहीं, क़र्ज़** (Loan) **ले लो, सूद दे देना।**

❁..... प्लॉट ख़रीदना है ? क़ीमतें बढ़ रही हैं, ख़ूब रक़म लगाने (Financing) का मौक़अ़ मिला है, कोई मस्अला नहीं, डरना नहीं, इदारे बहुत हैं, सूद पर क़र्ज़ ले लो, ज़मीन (Land) ख़रीद लो, कॉर्नर (Corner) का प्लॉट ख़रीद लो, जल्दी जल्दी क़र्ज़ ले लो, हां हां कोई मस्अला नहीं, **बस सूद दे देना।**

आज मुख़्तलिफ़ ज़राइए इब्लाग़ (Media) के ज़रीए मुसल्मानों को मुख़्तलिफ़ लालच दे कर शर्हे सूद (Interest rate) कम कर के सूद पर क़र्ज़ (Loan) लेने पर उक्साया जा रहा है, सूद की दर-ख़्वास्त (Application) दाख़िल करने पर कुरआ़ अन्दाज़ी और इन्आ़मात का लालच दिया जा रहा है।

मेरे मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें क्या हो गया है ? अरे माल व दुन्या और बीवी बच्चों की बे जा महब्बत ने इतना अन्धा कर दिया कि सूदी कारोबार और सूदी लैन दैन में पड़ गए। अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो गया और उस के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए और सूद की वजह से अ़ज़ाब ने आ लिया तो क्या करेंगे ?

सूदख़ोर को ए'लाने जंग :

सूदख़ोर को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से जंग का ए'लान है। चुनान्चे, इर्शादे बारी तआ़ला है :

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَ اِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۹﴾

﴿پ3، البقرۃ: 279﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन कर लो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल से लड़ाई का और अगर तुम तौबा करो तो अपना अस्ल माल ले लो न तुम किसी को नुक़्सान पहुंचाओ न तुम्हें नुक़्सान हो।

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि दो मुजरिमों के सिवा किसी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ए'लाने जंग नहीं किया गया : एक सूद लेना और दूसरे **औलियाउल्लाह** से अ़दावत रखना। चुनान्चे,

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : **''जिस ने मेरे किसी वली से अ़दावत रखी मैं ने उस के साथ ए'लाने जंग किया**, मेरे किसी बन्दे ने मेरे फ़राइज़ की बजा आ-वरी से ज़ियादा महबूब शै से मेरा क़ुर्ब ह़ासिल नहीं किया और मेरा बन्दा नवाफ़िल के ज़रीए़ मेरा क़ुर्ब ह़ासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उस से महब्बत करने लगता हूं, जब मैं उस से महब्बत करने लगता हूं तो मैं उस के कान बन जाता हूं जिन से वोह सुनता है, उस की आंखें बन जाता हूं जिन से वोह देखता है, उस के हाथ बन जाता हूं जिन से वोह पकड़ता है और उस के पाउं बन जाता हूं जिन से वोह चलता है, अगर वोह मुझ से सुवाल करे तो मैं उसे ज़रूर अ़त़ा फ़रमाता हूं और अगर किसी चीज़ से मेरी पनाह चाहे तो मैं उसे ज़रूर पनाह अ़त़ा फ़रमाता हूं।''(1)

या'नी जो सूद लेता है उस से भी ए'लाने जंग है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली से अ़दावत व बुग़्ज़ रखता है उस के लिये भी ए'लाने जंग है।

(۱)صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحدیث: 6502، ج4، ص248

ऐ सूदख़ोरो ! तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से उख़्रवी या दुन्यावी जंग का यक़ीन कर लो, तुम्हें दुन्या व आख़िरत में अ़ज़ाब का सामना करना पड़ेगा। ग़ौर कर लो, सोच लो, क्या तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से लड़ सकते हो ? क्या तुम अ़ज़ाबे इलाही को बरदाश्त कर सकते हो ? हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! कोई शख़्स लम्ह़ा भर अ़ज़ाबे इलाही बरदाश्त नहीं कर सकता।

ऐ सूदख़ोरो ! तुम मक्खी मच्छर का मुक़ाबला नहीं कर सकते, एक मा'मूली बीमारी (Disease) बरदाश्त नहीं कर सकते तो गुनाह किस हिम्मत पर करते हो ? तौबा कर लो, आ़जिज़ी इख़्तियार कर लो और छोड़ दो तमाम सूदी कामों को।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी

क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

सूद की नुहूसत और इस की तबाह कारियां

(The Curse of Interest)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइये ! सूद की नुहूसत और इस की दुन्या व आख़िरत की तबाह कारियां जानते हैं, क्यूं कि अब सूदी इदारे घर घर, दफ़्तर दफ़्तर जा कर सूद पर रक़म देने के लिये अ़मला (Staff) रख रहे हैं, कहीं **मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो !** आप न फिसल जाना, कोई आ कर आप को दौलत कमाने का फ़ार्मूला बता कर सूदी क़र्ज़ लेने में मुब्तला न कर दे कि सूद से दुन्या भी बरबाद होती है और आख़िरत भी।

सूदख़ोर ह़ासिद बन जाता है :

सूदख़ोर ह़ासिद बन जाता है। इस की तमन्ना होती है कि इस से क़र्ज़ लेने वाला न तो कभी फले फूले और न ही तरक़्क़ी करे, कि उस के फलने फूलने में इस की आमदनी तबाह होती है। क्यूं कि जिस ने इस से सूद पर क़र्ज़ लिया अगर वोह तरक़्क़ी कर जाएगा और क़र्ज़ उतार देगा तो इस की आमदनी ख़त्म हो जाएगी। येही ह़सद इसे कहीं का नहीं छोड़ता।

माहे नुबुव्वत, मम्बए़ जूदो सख़ावत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ह़सद (Envy, Jealousy) से बचते रहो क्यूं कि ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लक्ड़ियों को खा जाती है।"(1)

सूदख़ोर बे रह़्म हो जाता है :

सूदख़ोर के दिल से रह़्म निकल जाता है इसे किसी पर तर्स नहीं आता, मजबूर से मजबूर शख़्स इस के आगे एड़ियां रगड़ता है और अगर वोह सर की टोपी उतार कर इस के पाउं पर रख दे तो भी इसे रह़्म नहीं आता। क्यूं कि सूद ने इस के क़ल्ब को काला कर दिया है। और वोह हर एक की माली मदद सूद ही की ख़ात़िर करता है और इस त़रह़ क़र्ज़ देने के इस अ़ज़ीम अज्रो सवाब से भी मह़रूम हो जाता है जैसा कि बयान हुवा कि क़र्ज़ देने से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ किस क़दर राज़ी होता है, क़र्ज़ देने से उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कैसे राज़ी होते हैं,

(۱)سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الحسد، الحدیث4903،ج4،ص361

क़र्ज़ देने से किस क़दर मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही होती है, क़र्ज़ देने से मुसल्मान किस क़दर ख़ुश हो जाया करता है लेकिन चूंकि सूद की ला'नत इस के ऊपर पड़ गई अब येह किसी को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और उख़्रवी सवाब की ख़ातिर क़र्ज़ देने के लिये तय्यार ही नहीं है बल्कि जिसे भी क़र्ज़ देता है सूद के नाम पर देता है।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो लोगों पर रह़म नहीं करता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़म नहीं फ़रमाता।"(1)

सूदख़ोर माल का ह़रीस होता है :

सूदख़ोर, घर के घर तबाह व बरबाद करता है, सब को उजाड़ कर अपना घर बनाता है और माल की मह़ब्बत में दीवाना वार घूमता रहता है, स-दक़ा व ख़ैरात करना भी गवारा नहीं करता कि कहीं माल कम न हो जाए। क्यूं कि येही रक़म का वोह ढेर है जिस से इसे आमदनी ह़ासिल करनी है। येह बद नसीब दौलत का ढेर जम्अ़ करने में इस क़दर ह़िर्स का शिकार हो जाता है कि अपने अहलो इ़याल पर भी रक़म ख़र्च नहीं करता और अपने अहलो इ़याल को भी सह़ीह़ मा'नों में खिलाता पिलाता नहीं, बस मालो दौलत की गठड़ियां जम्अ़ करता चला जाता है। और आख़िर कार दौलत की येही हवस व ह़िर्स इसे जहन्नम की आग का ईंधन बना डालती है।

(۱)صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب رحمته صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم---الخ، الحدیث:2319، ص1268

आग से डरो :

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''तुम में से हर एक के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ यूं कलाम फ़रमाएगा कि उस के और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई तरजुमान न होगा, जब वोह बन्दा अपनी दाईं जानिब नज़र डालेगा तो उसे वोही कुछ नज़र आएगा जिसे उस ने आख़िरत के लिये आगे भेजा था और जब वोह अपनी बाईं जानिब नज़र डालेगा तो उसे वोही नज़र आएगा जिसे उस ने आगे भेजा था, फिर जब वोह अपने सामने देखेगा तो उसे आग के सिवा कुछ नज़र न आएगा, लिहाज़ा आग से डरो, अगर्चे एक ही खजूर के ज़रीए़ हो।''(1)

आह! येह माल की हवस अहलो इ़याल पर सहीह़ मा'नों में कुछ ख़र्च करने देती है न राहे ख़ुदा में कुछ ख़र्च करने देती है। याद रखिये कि माल व जाह की हवस दीन व ईमान के लिये बेह़द ख़त़रनाक है। चुनान्चे,

ह़ज़रते का'ब बिन मालिक अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''दो भूके भेड़िये जिन्हें बकरियों में छोड़ दिया जाए इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि माल और मरतबे का लालच इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाता है।''(2)

---

(۱) صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب الحث علی الصدقۃ ولو بشق --- الخ، الحدیث: 1016، ص507

(۲) سنن الترمذی، کِتَاب الزُّھْدِ، باب43، الحدیث: 2383، ج4، ص166

तो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ढील है :

ऐ सूदख़ोरो ! रब्बे अ़ज़ीज़ व क़दीर عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार ! कहीं ऐसा न हो कि मिली हुई जानी, माली ने'मतों और आसानियों के ज़रीए त़रह़ त़रह़ के गुनाहों का सिल्सिला बढ़ता रहे और कसा कसाया सुडोल (या'नी ख़ूब सूरत) बदन और माल व धन जहन्नम का ईंधन बनने का सबब बन जाए। इस ज़िम्न में ह़दीसे न–बवी मअ़ आयते क़ुरआनी मुला–ह़ज़ा कीजिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से थर्राइये : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जब तुम देखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या में गुनाहगार बन्दे को वोह चीज़ें दे रहा है जो उसे पसन्द हैं तो येह उस की त़रफ़ से ढील है।" फिर येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَیْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَیْءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿۴۴﴾

(پ7، الانعام:44)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब उन्हों ने भुला दिया जो नसीह़तें उन को की गई थीं हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि जब ख़ुश हुए उस पर जो उन्हें मिला तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया अब वोह आस टूटे रह गए।(1)

مـــــــدینـــہ

(۱)مُسْنَد للامام احمد بن حنبل، حدیث: ۱۷۳۱۳، ج۶، ص ۱۲۲

गुनाहों को अच्छा समझना कुफ़्र है :

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان इस आयते करीमा के तह़्त **''तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान''** में फ़रमाते हैं : इस आयते करीमा से मा'लूम हुवा कि गुनाह व मआ़सी के बा वुजूद दुन्यवी राह़तें मिलना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब और अ़ज़ाब (भी हो सकता) है कि इस से इन्सान और ज़ियादा ग़ाफ़िल हो कर गुनाह पर दिलेर हो जाता है, कभी ख़याल करता है कि ''गुनाह अच्छी चीज़ है वरना मुझे येह ने'मतें न मिलतीं'' येह कुफ़्र है।[1] मज़ीद फ़रमाया : ने'मत पर ख़ुश होना अगर फ़ख़्र, तकब्बुर और शैख़ी के त़ौर पर हो तो बुरा है और त़रीक़ए कुफ़्फ़ार है और अगर शुक्र के लिये हो तो बेहतर है, त़रीक़ए सालिह़ीन है।

इ़ब्रत अंगेज़ क़त्बा :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़-करिय्या तीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक मस्जिदे ह़राम शरीफ़ में मौजूद था कि उस के पास एक पथ्थर (Stone) लाया गया जिस पर कोई तह़रीर कन्दा (Engraved) थी। उस ने ऐसे शख़्स को बुलाने का कहा जो इस को पढ़ सके। चुनान्चे, मश्हूर ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तशरीफ़ लाए और उसे पढ़ा, उस में लिखा था : ''ऐ इब्ने आदम ! अगर तू

(1) या'नी गुनाह को गुनाह तस्लीम करना फ़र्ज़ है। इस को जान बूझ कर अच्छा कहना या अच्छा समझना कुफ़्र है। कुफ़्रिय्या कलिमात की तफ़्सीलात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब''** का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

अपनी मौत के क़रीब होने को जान ले तो लम्बी लम्बी उम्मीदों से कनारा कशी इख़्तियार कर के अपने नेक अ़मल में ज़ियादती का सामान करे और ह़िर्स व लालच और दुन्या कमाने की तदबीरें कम कर दे। (याद रख !) अगर तेरे क़दम फिसल गए तो रोज़े क़ियामत तुझे नदामत का सामना होगा। तेरे अहलो इ़याल तुझ से बेज़ार हो जाएंगे और तुझे तक्लीफ़ में मुब्तला छोड़ देंगे। तेरे मां बाप और अ़ज़ीज़ो अह़बाब भी तुझ से जुदा हो जाएंगे। तेरी औलाद और क़रीबी रिश्तेदार तेरा साथ न देंगे। फिर तू लौट कर दुन्या में आ सकेगा न ही नेकियों में इज़ाफ़ा कर सकेगा। पस उस ह़सरत व नदामत की साअ़त से पहले आख़िरत के लिये अ़मल कर ले।"(1)

वोह है ऐ़शो इ़शरत का कोई मह़ल भी

जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी

बस अब अपने इस जह्ल से तू निकल भी

येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

(١) ذم الهوى، الكتاب الخسون، الحديث ١٢٧٠، ص٤٣٦

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़क़्ल मन्द को चाहिये कि वोह अपनी गुज़श्ता ज़िन्दगी का जाएज़ा ले, अपने गुनाहों पर नादिम हो कर इन से सच्ची तौबा करे, ज़ियादा देर ज़िन्दा रहने की उम्मीद के धोके में न पड़े बल्कि क़ब्र व आख़िरत की तय्यारी के लिये फ़ौरन नेक आ'माल में लग जाए, दौलत व माल और अहलो इ़याल की महब्बत में नेकियां छोड़े न गुनाहों में पड़े कि इन सब का साथ तो दम भर का है और नेकियां क़ब्र व आख़िरत बल्कि दुन्या में भी काम आएंगी।

अ़ज़ीज़, अहबाब, साथी दम के हैं, सब छूट जाते हैं
जहां येह तार टूटा, सारे रिश्ते टूट जाते हैं

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! ऐसी फ़िक्रे आख़िरत उसी वक़्त हासिल हो सकती है जब हम मौत को हर वक़्त अपनी आंखों के सामने रखें और इस दारे फ़ना की फ़ानी अश्या की दिल में कुछ वुक़अ़त ही न समझें। बल्कि जब भी इस दुन्या की किसी चीज़ को देख कर ख़ुशी हासिल हो तो फ़ौरन येह बात याद करें कि अ़न्क़रीब येह फ़ना हो जाएगी या मुझे इसे छोड़ कर जाना पड़ेगा।

जब इस बज़्म से उठ गए दोस्त अक्सर
और उठते चले जा रहे हैं बराबर
येह हर वक़्त पेशे नज़र जब है मन्ज़र
यहां पर तेरा दिल बहलता है क्यूंकर
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सूदख़ोर का माल उसे कोई नफ़्अ़ नहीं देता :

सूदख़ोर जब मरेगा तो उस का माल उसे कोई नफ़्अ़ न देगा बल्कि वोह अपना सब माल व अस्बाब पीछे छोड़ जाएगा।

साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बन्दा कहता है मेरा माल, मेरा माल। ह़ालां कि उस का माल तो सिर्फ़ तीन त़रह़ का है : (1) जो इस ने खा कर फ़ना कर दिया (2) जो पहन कर बोसीदा कर दिया और (3) जो स–दक़ा कर के मह़फ़ूज़ कर लिया। इस के इ़लावा जो कुछ है वोह लोगों के लिये छोड़ कर चला जाएगा।"(1)

सूद का अन्जाम कमी पर होता है :

सूदख़ोर चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और ग़ज़ब की परवाह नहीं करता बल्कि सिर्फ़ माल की ज़ियादती को तरजीह़ देता है। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न सिर्फ़ उस ज़ियादती को ख़त्म कर देता है बल्कि अस्ल माल को भी ख़त्म कर देता है। यहां तक कि उस सूदख़ोर का अन्जाम इन्तिहाई फ़क़्र पर होता है, जैसा कि अक्सर सूदख़ोरों का मुशा–हदा भी किया गया है।

مـــــــــــــدينــــه

(۱)صحیح مسلم، کتاب الزھد والرقائق، الحدیث: 2958، ص1582

अगर फ़र्ज़ कर लें कि वोह इसी धोका में मुब्तला हो कर इस दारे फ़ानी से चल बसा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के वारिसों के हाथों उस का माल तबाह व बरबाद कर देगा। और दुन्या व आख़िरत में ज़िल्लत व रुस्वाई के सिवा कुछ हाथ न आएगा। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِى الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿۲۷۶﴾

﴿پ۳، البقرۃ:۲۷۶﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को और **अल्लाह** को पसन्द नहीं आता कोई ना शुक्रा बड़ा गुनहगार।

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''(ज़ाहिरी तौ़र पर) सूद अगर्चे ज़ियादा ही हो आख़िर कार उस का अन्जाम कमी पर होता है।''(1)

हो सकता है कि किसी के दिल में येह वस्वसा (Temptation) आए कि हम तो देखते हैं कि कुफ़्फ़ार वग़ैरा सूद से ख़ूब फल फूल रहे हैं, हम ने तो किसी को बरबाद होते नहीं देखा तो हमें ही क्यूं इतना डराया जाता है ?

अरे मेरे नादान इस्लामी भाई ! आप को क्या हो गया है ? क्या आप नहीं जानते कि गोबर (Cow dung) का कीड़ा (Worm) गोबर खा कर ज़िन्दा रहता है मगर बुलबुल (Nightingale) कभी गोबर पसन्द नहीं करती। और कुत्ते (Dog) की ख़ूराक हड्डी (Boan) है मगर बकरी (Goat) हड्डी (Boan) नहीं

(۱) المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث: 4026، ج2، ص109

खाया करती । मोमिन मोमिन है, काफ़िर काफ़िर है । ऐ मुसल्मान ! उसे या'नी ह़राम खाने वाले को देख कर तुम क्यूं वस्वसे का शिकार होते हो ? येह बे वुकूफ़ी व नादानी है, येह ईमान की कमज़ोरी है, उन का कस्रते माल मत देखो, याद रखो कि **ब-र-कत और कसरत में बहुत फ़र्क़ है ।**

ब-र-कत और कसरत में फ़र्क़ :

कसरत के मा'ना हैं ज़ियादती और **ब-र-कत** के मा'ना हैं जम जाना, न निकलना । या'नी थोड़ी सी ने'मत मुबारक हो तो बहुत फ़ाएदा देती है, चुनान्चे ब-र-कत वाली थोड़ी सी बारिश रह़मत होती है मगर कसरत की बारिश कभी अ़ज़ाब भी बन जाया करती है । क्या आप नहीं देखते कि साल में एक कुतिया (Bitch) कितने बच्चे जनती है ? और एक बकरी या गाय वग़ैरा कितने बच्चे जनती हैं ? ग़ौर करें तो मा'लूम होगा कि कुतिया साल में कई कई बच्चे जन जाती है, मगर गाय या बकरी वग़ैरा बस एक दो बच्चे ही जनती हैं और इस के बा वुजूद रेवड़ भी इन्ही के बनते हैं और कुत्तों के कभी रेवड़ नहीं बनते ।

इसी त़रह़ रोज़ाना हज़ारों की ता'दाद में गाय और बकरियां ज़ब्ह़ की जाती हैं और ह़ज के दिनों मिना के मैदान में, उन पुर बहार फ़ज़ाओं में लाखों की ता'दाद में येह जानवर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ज़ब्ह़ किये जाते हैं, **मुसल्मान करोड़ों की ता'दाद में बक़र ईद पर गाय और बकरों को अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की राह में ज़ब्ह़ करते हैं । मगर येह कुत्ता अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की राह में कभी नहीं कटता, क्यूं कि येह ह़राम है । पस जिस चीज़ को अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

ने ह़राम क़रार दिया है वोह ता'दाद में कसीर तो हो सकती है मगर ब-र-कत से ख़ाली होती है और जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़लाल क़रार दिया है वोह क़िल्लत के बा वुजूद ब-र-कत वाली होती है।

सूदख़ोर मज़्लूम की बद दुआ़ से हलाक हो जाता है :

सूदख़ोर को लोग बुरा जानते हैं इसे फ़ासिक़ो फ़ाजिर कहते हैं, इस के पास अपनी अमानतें नहीं रखवाते, सूदख़ोर के हाथों जो गु-रबा व फु-क़रा बरबाद होते हैं और जिन से सूद वुसूल करने में येह सख़्ती करता है यक़ीनन उन की बद दुआ़ओं का शिकार हो जाता है। और येह भी एक बुन्यादी सबब है जो इस की जान व माल से ख़ैरो ब-र-कत के ख़ातिमे का बाइ़स बनता है क्यूं कि मज़्लूम की दुआ़ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई ह़िजाब नहीं होता। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को यमन भेजा तो इर्शाद फ़रमाया : ''मज़्लूम की बद दुआ़ से बचना, क्यूं कि इस के और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई ह़िजाब नहीं होता।''(1)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 853 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल''** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 719 पर एक ह़दीसे पाक में है कि ताजदारे रिसालत,

---

(۱)صحیح البخاری، کتاب المظالم و الغصب، باب الاتقاء والحذر من دعوۃ المظلوم، الحدیث: 2448، ج2، ص128

शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मज़्लूम ज़ालिम के लिये बद दुआ़ करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस मज़्लूम से इर्शाद फ़रमाता है : ''मैं ज़रूर तेरी मदद फ़रमाऊंगा अगर्चे कुछ मुद्दत बा'द ही हो।''[1]

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! सूदख़ोर के ज़ुल्म का शिकार होने वाली एक औ़रत ने जब एक सूदख़ोर के लिये बद दुआ़ की तो उस का अन्जाम क्या हुवा आइये जानते हैं। चुनान्चे,

सूदख़ोर ह़कीम की इ़ब्रत नाक मौत :

मदी-नतुल औलिया (मुलतान शरीफ़) में एक ह़कीम ह़िक्मत की दुकान चलाता था, एक दिन वोह ह़कीम शाम को मत़ब से फ़ारिग़ हो कर घर गया, खाना खाया, इ़शा की नमाज़ पढ़ी और मा'मूलाते शब से फ़ारिग़ हो कर सो गया। जब रात का एक ह़िस्सा गुज़र गया तो अचानक वोह ह़कीम जाग उठा और अपने पेट पर हाथ रख कर बैठ गया। उस पर बेचैनी की कैफ़िय्यत त़ारी थी, कुछ देर के बा'द एक सन्सनी ख़ेज़ मन्ज़र यूं रूनुमा हुवा कि **उस का पेट फटा और तमाम घर में गन्दगी और बदबू की शदीद आंधी चल पड़ी, जो फैलते फैलते पूरे मह़ल्ले में फैल गई,** बदबू इतनी शदीद थी कि कई अफ़राद बेहोश भी हो गए, अहले ख़ाना ने म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन के लोगों को रातों रात बुलाया और उस बदबूदार लाश को कूड़ा करकट वाली गाड़ी में डलवा कर शहर से बाहर फिंकवा दिया।

(1) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल, जि. 1, स. 719

अगली सुब्ह इस सन्सनी ख़ैज़ वाक़िए़ की ख़बर तमाम अ़लाक़े में फैल गई हर शख़्स बेचैन था कि आख़िर येह ह़कीम ऐसा कौन सा बुरा काम किया करता था कि इस क़दर शदीद अ़ज़ाब का शिकार हो कर मरा। इस भयानक अन्जाम की ख़बर बताते हुए एक शख़्स ने बताया कि येह ह़कीम मत़ब के इ़लावा सूदी लैन दैन भी किया करता था और **सानिह़ा वाले दिन इस ने एक मक़रूज़ औ़रत से सूदी रक़म कम होने पर बद तमीज़ी की, जिस पर उस ने बद दुआ़ दी और यूं येह ह़कीम सूदी लैन दैन की वजह से इ़ब्रत नाक अ़ज़ाब से दो चार हो गया।**

सूद से मईशत बरबाद हो जाती है :

येह सूद ही की नुहूसत है कि मुल्क से तिजारत का दीवालिया (Insolvent) निकल जाता है। ज़ाहिर है कि दौलत चन्द इदारों ही में मह़दूद हो कर रह जाती है और तिजारत (Trading) जिस दौलत (Wealth / money) के ज़रीए़ होती है जब चन्द इदारों ही तक मह़दूद हो जाएगी तो मईशत की गाड़ी का पहिया भी रुक जाएगा।

मिसाल के त़ौर पर मैं एक चादर ख़रीदता और जिस ने मुझे चादर बेची उस को नफ़्अ़ होता। और इस त़रह़ चादर की डीमान्ड बढ़ती जिस से उस की पैदावार भी बढ़ती और फिर कपड़े की इन्डस्ट्री चलती, डाइंग (Dying) की इन्डस्ट्री चलती, सूत (Yarn) का काम चलता, कपास (Cotton) की फ़स्ल मज़ीद काश्त की जाती, त़रह़ त़रह़ की ब-र-कतें नसीब होतीं, मगर सूद के हुसूल की वजह से लोग मार्केट (Market) से पैसा उठा कर मुख़्तलिफ़ सूदी इदारों में जम्अ़ करवा देते हैं। क्यूं कि इन्हें घर बैठे बिठाए खाने की आ़दत पड़ जाती है।

जराइम का इज़ाफ़ा :

सूद की नुहूसत से जब इन्डस्ट्री (Industry) बरबाद हो जाती है तो तिजारत (Trading) ख़त्म हो जाती है और इस त़रह़ बे रोज़गारी (Unemployment) बढ़ती है। जब बे रोज़गारी बढ़ती है तो जराइम में इज़ाफ़ा हो जाता है। कारख़ाने तो बन्द हो जाते हैं मगर लोगों की ज़रूरतें बन्द नहीं होतीं बल्कि वोह अब भी उन से लगी होती हैं। चुनान्चे, एक बे रोज़गार शख़्स जब देखता है कि बीवी बच्चे भूक से बिलक रहे हैं, मां बाप उम्मीदें बांधे हैं कि बेटा कब कुछ कमा कर लाएगा। अब येह शख़्स सूद की इस नुहूसत (The curse of ineterest) की वजह से क्या करता है ?

आह ! अब येह नौ जवान किसी का मोबाइल फ़ोन छीन लेता है, किसी की कार छीन लेता है, किसी के घर में डकैती डालता है, किसी की जेब से पर्स मार लेता है। फिर येही नौ जवान दौलत की ख़ातिर क़त्ल तक कर देता है, इसी दौलत की ख़ातिर प्लॉटों पर क़ब्ज़ा करता है। इसी दौलत की ख़ातिर लोग मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जराइम का शिकार हो जाते हैं और इस त़रह़ मुआ़-शरे में जराइम का एक ख़त्म न होने वाला सिल्सिला पैदा होता चला जाता है।

येह नहीं कहा जा सकता कि येह शख़्स जो कुछ कर रहा है दुरुस्त कर रहा है, बल्कि यक़ीनन येह ग़लत़ कर रहा है, येह मुजरिम है या'नी डकैती व चोरी, मोबाइल फ़ोन छीनना, लोगों की जेबें काटना, घरों को लूटना, तिजोरियां साफ़ करना वग़ैरा येह सब ग़लत़ है, अगर बिग़ैर तौबा किये मर गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए तो सख़्त अ़ज़ाब का अन्देशा है।

सूद की इसी नुहूसत की वजह से दौलत बस चन्द इदारों तक मह़दूद हो कर रह गई है कि जिस के ज़रीए ख़रीदो फ़रोख़्त और तिजारत होनी थी। अब इस का नतीजा येह है कि मुआ़–शरे में जराइम बढ़ चुके हैं।

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! रिश्वत के क़ल्अ़ क़म्अ़ पर हुकूमती इदारे काम कर रहे हैं, चोरी की रोकथाम के लिये हुकूमती इदारे काम कर रहे हैं। **ऐ काश !** सूद की इस बढ़ती हुई नक़्लो ह़–र–कत के लिये भी कोई हुकूमती इदारा बन जाए, जो सूद की इस नुहूसत को रोके।

बरोज़े क़ियामत सूदख़ोर की ह़ालत :

सूदख़ोर का बरोज़े ह़श्र वोह अन्जाम होगा कि الامان والحفیظ--- चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है की शहन्शाहे मदीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"क़ियामत के दिन सूदख़ोर को इस ह़ाल में उठाया जाएगा कि वोह दीवाना व मख़्बूतुल ह़वास होगा।"**(1)

या'नी सूदख़ोर क़ब्रों से उठ कर ह़श्र की त़रफ़ ऐसे गिरते पड़ते जाएंगे जैसे किसी पर शैत़ान सुवार हो कर उसे दीवाना कर दे। जिस से वोह यक्सां न चल सकेंगे। इस लिये कि जब लोग क़ब्रों से उठाए जाएंगे और मह़शर की त़रफ़ चलेंगे तो सब यहां तक कि कुफ़्फ़ार भी दुरुस्त चल पड़ेंगे मगर सूदख़ोर को

مـــــــــــــــــــــــدینـــــہ

(۱)المعجم الکبیر، عوف بن مالک، الحدیث:110، ج18، ص۶۰

चलना फिरना मुश्किल होगा और येही सूदख़ोर की पहचान होगी।

सूदख़ोर का नफ़्ल क़बूल होगा न कोई फ़र्ज़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सूदख़ोर को आख़िरत में हलाक फ़रमाएगा, उस का स-दक़ा, ख़ैरात, ह़ज, सिलए रेह़मी, जिहाद सब बरबाद होगा इस लिये कि इस ने सारी नेकियां इस सूदी माल से की होंगी। क्यूं कि ख़राब बीज का फल भी ख़राब ही होता है, इस सूदख़ोर का माल न इसे मौत के वक़्त काम आएगा न मौत के बा'द। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : ''सूदख़ोर का न स-दक़ा क़बूल किया जाएगा, न जिहाद, न ह़ज और न ही सिलए रेह़मी।''(1)

सूदख़ोर की क़ब्र से दहकती आग निकलती :

आज से तक़्रीबन पचास साल क़ब्ल की बात है कि **जलाल पूर पीरवाला** के नवाह़ी अ़लाक़े की एक क़ब्र से **हर जुमा'रात को दहकती हुई आग निकलती थी,** आग के शो'ले दूर से वाज़ेह़ दिखाई दिया करते थे, अहले अ़लाक़ा उस क़ब्र में मदफ़ून शख़्स पर अ़ज़ाबे इलाही होता हुवा देख कर निहायत परेशान थे। चुनान्चे,

(۱) تفسیر قرطبی، البقرۃ، تحت الآیۃ:276، ج2، الجزء الثالث، ص274

वोह एक बुज़ुर्ग की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और तमाम माजरा बयान किया। वोह बुज़ुर्ग चन्द दिन तक उस अ़ज़ाब वाली क़ब्र पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते रहे, मुख़्तलिफ़ अवरादो वज़ाइफ़ में मश्ग़ूल रहे और मय्यित के लिये दुआ़एं की बिल आख़िर वोह अ़ज़ाब की सूरत आंखों से ओझल हो गई। **अ़ज़ाब वाली क़ब्र के मु-तअ़ल्लिक़ जब मा'लूमात की गईं तो पता चला कि साह़िबे क़ब्र ज़ाहिरी त़ौर पर तो नेक मुसल्मान था लेकिन सूद का लैन दैन करता था।**

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! न जाने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब किस गुनाह पर नाज़िल हो जाए, हमें हर गुनाह से तौबा करनी चाहिये। हमें क्या हो गया है ? अरे माल और दुन्या की मह़ब्बत ने इतना अन्धा कर दिया कि सूदी कारोबार और सूदी लैन दैन में मुब्तला हो कर सूद पर क़र्ज़ लेने के लिये तय्यार हो गए। अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो गया और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए और सूद की वजह से अ़ज़ाब ने आ लिया तो क्या करेंगे ?

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी
एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है
आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सो बरस का है पल की ख़बर नहीं

ह़लाल व ह़राम की तमीज़ का ख़त्म होना :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! माले ह़राम आफ़त है और आह ! अब वोह दौर आ चुका है कि मुआ़-शरे से ह़लाल व ह़राम की तमीज़ ख़त्म हो गई है, इन्सान माल की मह़ब्बत में अन्धा हो चुका है, इसे बस माल चाहिये । चाहे जैसे आए । चुनान्चे,

हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि आदमी परवाह भी न करेगा कि इस चीज़ को कहां से ह़ासिल किया है ? ह़लाल से या ह़राम से ।"(1)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! माले ह़राम में कोई भलाई नहीं, बल्कि इस में बरबादी ही बरबादी है, माले ह़राम से किया गया स-दक़ा क़बूल होता है न ही इस में ब-र-कत होती है और छोड़ कर मरे तो अ़ज़ाबे जहन्नम का सबब बनता है । चुनान्चे,

माले ह़राम से किया गया स-दक़ा मक़्बूल नहीं :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो बन्दा माले ह़राम ह़ासिल करता है अगर उस को स-दक़ा करे तो मक़्बूल नहीं और ख़र्च करे तो उस के लिये उस में ब-र-कत नहीं और छोड़ कर मरेगा तो

مدینہ

(۱)صحیح البخاری، کتاب البیوع، بَاب قَوْلِ اللهِ تَعَالَىٰ: يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰا،

الحدیث:2083، ج2،ص14

जहन्नम में जाने का सामान है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बुराई से बुराई को नहीं मिटाता, हां नेकी से बुराई को मिटा देता है, बेशक ख़बीस को ख़बीस नहीं मिटाता।"(1)

ह़राम खाने वाला मुस्तह़िक़े नार है :

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि म-दनी ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो गोश्त ह़राम से उगा है (या'नी पला बढ़ा है) जन्नत में दाख़िल न होगा। (या'नी इब्तिदाअन, क्यूं कि मुसल्मान बिल आख़िर जन्नत में जाएगा) कि उस के लिये आग ज़ियादा बेहतर है।"(2)

ह़राम खाने से दुआ क़बूल नहीं होती :

साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पाक है और पाक ही को दोस्त रखता है और उस ने मुअमिनीन को वोही हुक्म दिया है जो मुर-सलीन को हुक्म दिया था। चुनान्चे, उस ने रसूलों से इर्शाद फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَ اعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِیْمٌ ﴿ؕ۵۱﴾ (پ18، المومنون:51)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ पैग़म्बरो पाकीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छा काम करो मैं तुम्हारे कामों को जानता हूं।

مدینہ

(۱) المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن مسعود، الحدیث: 3672، ج2، ص34

(۲) المرجع السابق، مسند جابر بن عبد اللہ، الحدیث: 14448، ج5، ص64 ملتقطاً

और मोमिनों से इर्शाद फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ (پ2، البقرۃ:172)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें।

फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स का ज़िक्र किया जो त़वील सफ़र करता है, जिस के बाल परेशान और बदन ग़ुबार आलूद है (या'नी उस की ह़ालत ऐसी है कि जो दुआ़ करे वोह क़बूल हो) और अपने हाथ आस्मान की त़रफ़ उठा कर या रब ! या रब ! कहता है ह़ालां कि **उस का खाना ह़राम हो, पीना ह़राम, लिबास ह़राम और ग़िज़ा ह़राम, फिर उस की दुआ़**(1) **कैसे क़बूल होगी ।''**(2)

एक रिवायत में ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को **मुस्तजाबुद्दा'वात** बनने का नुस्ख़ा इर्शाद फ़रमाते हुए जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ सा'द ! **अपनी ग़िज़ा पाक कर लो ! मुस्तजाबुद्दा'वात हो जाओगे,** उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की जान है ! बन्दा ह़राम का लुक़्मा अपने पेट में डालता है तो उस के 40 दिन के अ़मल क़बूल नहीं होते **और जिस बन्दे का गोश्त ह़राम और सूद से पला बढ़ा हो उस के लिये आग ज़ियादा बेहतर है ।''**(3)

(1) या'नी अगर क़बूले दुआ़ की ख़्वाहिश हो तो कस्बे ह़लाल इख़्तियार करो कि इस के बिग़ैर क़बूले दुआ़ के अस्बाब बेकार हैं।

(۲) المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هریرة، الحدیث: 8356، ج3، ص220

(۳) المعجم الاوسط، الحدیث: 6495، ج5، ص34

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर दुआ़ की क़बूलिय्यत की ख़्वाहिश हो तो कस्बे ह़लाल इख़्तियार कीजिये कि बिग़ैर इस के दुआ़ क़बूल होती है न नमाज़ और न ही दूसरे फ़राइज़ । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : **''सूदख़ोर का न स-दक़ा क़बूल किया जाएगा, न जिहाद, न ह़ज और न ही सिलए रेह़मी ।''**(1)

आह ! नेकियां ख़ाक हो गईं :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, **मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़ियामत के दिन कुछ लोगों को लाया जाएगा, जिन के पास **तिहामा** पहाड़ों की मिस्ल नेकियां होंगी यहां तक कि जब उन को लाया जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की नेकियों को उड़ती हुई ख़ाक की त़रह़ कर देगा, फिर उन्हें जहन्नम में फेंक दिया जाएगा ।'' अ़र्ज़ की गई : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह कैसे होगा ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह नमाज़ पढ़ते, ज़कात देते, रोज़े रखते और ह़ज करते होंगे लेकिन जब उन्हें कोई ह़राम चीज़ पेश की जाती तो ले लेते थे पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के आ'माल को मिटा देगा ।''(2)

(۱) تفسیر قرطبی، سورۃ البقرۃ، تحت الآیۃ:276، ج2، ص274

(۲) کتاب الکبائر للذہبی، الکبیرۃ الثامنۃ والعشرون، فصل فی من---الخ، ص136

सूदख़ोर को अज़्दहे ने लपेट लिया :

कोएटा एन एन आई न्यूज़ एजन्सी के ह़वाले से एक ख़बर मन्क़ूल है कि बलूचिस्तान के एक क़स्बे में मुर्दे को लह़द में उतारते हुए उस वक़्त लोगों में ख़ौफ़ो हिरास फैल गया जब मुर्दे से लिपटे एक अज़्दहे ने कफ़न से अपना सर बाहर निकाला। तफ़्सीलात के मुत़ाबिक़ **शैख़ मांदा** का रिहाइशी इन्तिक़ाल कर गया। नमाज़े जनाज़ा के बा'द जब मुर्दे को लह़द में उतारते वक़्त उस के ऊपर से कपड़ा हटाया गया तो **उस के कफ़न के ऊपर एक ख़ौफ़नाक अज़्दहा लिपटा हुवा था,** ऐ़नी शाहिदों के मुत़ाबिक़ सांप मुर्दे के पाउं से बल खाता हुवा पूरे कफ़न से होता हुवा उस के सर के ऊपर था। लोगों ने बताया कि **हलाक होने वाला शख़्स सूद की एक क़िस्म का कारोबार करता था** और उ़-लमा ने लोगों को सांप मारने से मन्अ़ करते हुए इसी त़रह़ दफ़्न करने का हुक्म दे दिया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को मह़फ़ूज़ फ़रमाए।

सूद का इलाज

(The Cure of Interest)

पहला इ़लाज लम्बी उम्मीदों से कनारा कशी :

मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! सूद की नुह़ूसत से मह़फ़ूज़ रहने के लिये सब से पहले लम्बी उम्मीदों से अपने दामन को पाक रखने की ज़रूरत है। चुनान्चे,

सामान सो बरस का है पल की ख़बर नहीं :

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से एक लौंडी एक सो दीनार में ख़रीदी और एक महीने तक का उधार किया तो मैं ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "क्या तुम उसामा पर तअ़ज्जुब नहीं करते कि जिस ने एक महीने का उधार कर के लौंडी ख़रीदी है । **इस ने तो लम्बी उम्मीद बांध रखी है ।** उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मैं ने अपनी आंखें जब भी खोलीं तो येही ख़याल किया कि पलकें बन्द करने से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर लेगा और जब मैं अपनी आंखें उठाता हूं तो येही ख़याल करता हूं कि इसे नीचे करने से पहले मेरी रूह़ क़ब्ज़ हो जाएगी और **जब मैं लुक़्मा उठाता हूं तो येही ख़याल होता है कि इस के निगलने से पहले पहले मौत आ जाएगी ।**" इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ इन्सानो ! अगर तुम्हें अ़क़्ल है तो अपने आप को मुर्दा लोगों में शुमार करो,** उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है जिस बात का तुम से वा'दा किया गया है (या'नी मौत) वोह आने वाली है और तुम उसे आ़जिज़ नहीं कर सकते ।"(1)

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं

सामान सो बरस का है पल की ख़बर नहीं

(۱) شعب الایمان، باب فی الزھد و قصر الأمل، الحدیث: 10564، ج7، ص355

इस रिवायत में किस क़दर इ़ब्रत के म-दनी फूल हैं, येही वोह लम्बी उम्मीदें हैं जो त़वील मन्सूबों और त़वील ज़िन्दगी की उम्मीद पर सूदी क़र्ज़ लेने देने पर आमादा कर देती हैं। कि पांच[5] या दस[10] सालों में क़िस्त़ों की अदाएगी कर देंगे।

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! लम्बी उम्मीदों का बुन्यादी सबब दुन्या की मह़ब्बत है और येह माल और दुन्या की मह़ब्बत ही बन्दे को मौत से ग़ाफ़िल कर देती है। जिस के सबब वोह दुन्या का ऐ़शो आराम ह़ासिल करने के लिये हर दम मसरूफ़ रहता है। हम बे कसों के मददगार, सरकारे वाला तबार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के कसीर इर्शादात हैं जिन से दुन्या की मह़ब्बत से जान छुड़ा कर आख़िरत की तय्यारी का ज़ेह़न मिलता है। और इन इर्शादात में सबब और इ़लाज दोनों मौजूद हैं। चुनान्चे,

"तूले अमल" के छ हुरूफ़ की निस्बत से लम्बी उम्मीदों के मु-तअ़ल्लिक़ छ फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

(1)..... ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमारे लिये मुरब्बअ़ शक्ल में एक लकीर खींची। उस के दरमियान भी एक लकीर खींची, फिर उस के गिर्द कई लकीरें खींचीं और एक लकीर खींची जो उस मुरब्बअ़ से बाहर जा रही थी। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो येह क्या है ?" हम ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह**

और उस का रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरमियान वाली लकीर के बारे में फ़रमाया कि येह इन्सान है और मुरब्बअ़ लकीर के बारे में फ़रमाया कि येह मौत है जो उसे घेरे हुए है और येह दरमियान वाली लकीरें मसाइब हैं जो इस को नोचते हैं अगर एक से बच जाए तो दूसरे के हथ्थे चढ़ जाता है और बाहर निकलने वाली लकीर के बारे में फ़रमाया कि येह उम्मीद है।(1)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम सब जन्नत में जाना चाहते हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"उम्मीदें कम रखो, अपनी मौत को आंखों के सामने रखो और अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **से इस त़रह़ ह़या करो जिस त़रह़ ह़या करने का ह़क़ है।"**(2)

﴾3﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल से उन के ईमान की ह़क़ीक़त पूछी तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : **"मैं जब भी कोई क़दम उठाता हूं तो येह ख़याल करता हूं कि इस के बा'द दूसरा क़दम नहीं उठाऊंगा।"**(3)

मदीना

(۱)صحیح البخاری، کتاب الرقاق، فی الامل وطولہ، الحدیث:6417، ج4، ص224

(۲)کتاب الزھد لابن مبارک، باب الھرب من الخطایا والذنوب، الحدیث:317، ص107

(۳)حلیۃ الاولیاء، الرقم۳۶ معاذ بن جبل، الحدیث:816، ج1، ص306

﴾4﴿...... हज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा–रका तिलावत फ़रमाई :

فَمَنۡ یُّرِدِ اللّٰہُ اَنۡ یَّہۡدِیَہٗ یَشۡرَحۡ صَدۡرَہٗ لِلۡاِسۡلَامِ ۚ

﴾پ8،الانعام:125﴿

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : और जिसे **अल्लाह** राह दिखाना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिये खोल देता है।

इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब नूर सीने में दाख़िल होता है तो सीना खुल जाता है।" अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या इस की कोई अ़लामत है जिस के ज़रीए़ पहचान हो सके ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**हां धोके वाले घर से दूर रहना, दाइमी घर की त़रफ़ रुजूअ़ करना और मौत के आने से पहले इस के लिये तय्यारी करना।**"(1)

﴾5﴿...... हज़रते **अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि एक रोज़ हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त धूप दरख़्त की टहनियों तक पहुंच चुकी थी। पस आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**दुन्या इसी क़दर बाक़ी रह गई है जिस क़दर गुज़रे हुए दिन के मुक़ाबले में येह वक़्त बाक़ी है।**"(2)

مـــــــــــدینـــــہ

(۱) المستدرک للحاکم، کتاب الرقاق، باب اعلام النور فی الصدور، الحدیث:7933، ج5، ص442

(۲) موسوعۃ للامام ابن ابی الدنیا، کتاب قصر الامل، الحدیث120، ج3، ص331

(6)..... ह़ज़रते अ़म्र बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, **मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** عَزَّ وَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** की क़सम ! मैं तुम पर फ़क़ीरी से ख़ौफ़ नहीं करता, मगर ख़ौफ़ है कि तुम पर दुन्या फैला दी जाए जैसे तुम से पहले वालों पर फैला दी गई थी, तो तुम उस में रग़बत कर जाओ जैसे वोह लोग रग़बत कर गए और तुम्हें वैसे ही हलाक कर दे जैसे उन्हें हलाक कर दिया।"(1)

दूसरा इ़लाज दौलते दुन्या से छुटकारा :

दुन्यावी दौलत की मह़ब्बत ने हमें बरबाद कर दिया है, हम अपने मुआ़-शरे को देखते हैं कि दौलत मन्दों के पीछे आंखें बन्द किये दौड़ा ही चला जा रहा है, इसे न तो इस बात से कोई ग़रज़ है कि येह दौलत मन्द सूद की इ़मारत पर खड़ा हो कर इतना ऊंचा नज़र आ रहा है और न ही इसे इस बात की कोई परवाह है कि इस ने येह दौलत कैसे कमाई, बल्कि इस की तो ख़्वाहिश ही येह है कि वोह भी दौलत मन्द बन जाए। आज आप को ऐसे कई लोग मिलेंगे, कि जब उन से पूछें कि इन दौलत मन्दों के पीछे क्यूं भागते हैं ? तो कहेंगे : "भई आप को नहीं पता कि दौलत कितनी ज़रूरी है, दौलत से इ़ज़्ज़त है, दौलत से शोहरत है, दौलत से सब कुछ है।"

مدینہ

(۱)صحیح البخاری، کتاب الرقاق، بَاب مَا یُحْذَرُ مِنْ زھرۃ الدُّنْیَا ۔۔الخ، الحدیث: ۶۴۲۵، ج ۴، ص ۲۲۵ ملتقطاً

ह़क़ीक़ी दौलत :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या के माल व दौलत की कोई ह़ैसिय्यत नहीं बल्कि ह़क़ीक़ी दौलत तक़्वा, परहेज़ गारी, ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह दौलत उसे अ़त़ा फ़रमाता है जिस से राज़ी होता है । लिहाज़ा दौलत व हुकूमत का होना फ़ज़ीलत की बात नहीं है । क्यूं कि फ़िरऔ़न, नमरूद और क़ारून भी तो दौलत व हुकूमत वाले थे । मगर उन की दौलत व हुकूमत उन्हें अ-बदी ला'नत से मह़फ़ूज़ न रख सकी जिस से मा'लूम हुवा कि हुकूमत और दौलत का होना फ़ज़ीलत का बाइ़स नहीं, बल्कि फ़ज़ीलत का बाइ़स तो येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम से राज़ी हो जाए, तक़्वा व परहेज़ गारी मिल जाए । और अगर दौलत मिले तो वोह जिस के मिलने पर रब राज़ी हो, ह़लाल और शुबा से पाक हो । जैसा कि दौलत तो सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के पास भी थी, मगर उन की दौलत ह़राम और शुबा के माल से पाक थी । और उन्हें जो दौलत भी मिलती उसे इस्लाम के नाम पर क़ुरबान करते चले जाते और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा के ह़ुसूल की कोशिश करते थे । चुनान्चे, दौलत मन्द सह़ाबए किराम ने अपनी दौलत से ऐसे ऐसे ग़ुलाम आज़ाद किये कि उन्हों ने इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ला ज़वाल मिसालें रक़म कीं । या'नी अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल

ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को आज़ाद कर के सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश किया और फिर उन्हों ने इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जो मिसाल क़ाइम की उसे कौन नहीं जानता।

ह़लाल पर ह़िसाब और ह़राम पर अ़ज़ाब है :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़क़ीक़त में दौलत व शोहरत जैसी सब चीज़ें आज़माइश हैं, अगर्चे तमाम दौलत ह़लाल हो फिर भी उस का ह़िसाब देना पड़ेगा। चुनान्चे,

ह़ज़रते अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक बार हम ज़ईफ़ और नादार लोग बैठे हुए थे कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए, उस वक़्त एक शख़्स क़ुरआने करीम की तिलावत कर रहा था और हमारे लिये दुआ़ कर रहा था। तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये जिस ने मेरी उम्मत में ऐसे नेक सीरत बन्दे पैदा किये, जिन के साथ मुझे रहने का ह़ुक्म दिया गया है।" फिर इर्शाद फ़रमाया : "फ़ु-क़रा मुस्लिमीन को क़ियामत के रोज़ कामिल नूर की बिशारत हो कि वोह ग़नी लोगों से आधा दिन पहले जन्नत में दाख़िल होंगे या'नी पांच सो500 साल की मिक़्दार पहले दाख़िल होंगे येह **फ़ु-क़रा जन्नत में ने'मतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो रहे होंगे और ग़नी लोगों का मुह़ा-सबा किया जा रहा होगा।**"(1)

مدینہ

(۱)الدر المنثور، الکھف، تحت الایۃ:28، ج5، ص382

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ालिस ह़लाल माल जम्अ़ करने वाले उ-मरा या'नी वोह लोग जो ख़ालिस ह़लाल माल ले कर क़ियामत के दिन ह़ाज़िर होंगे जब वोह अपने माल का ह़िसाब दे रहे होंगे तो फ़ु-क़रा उन उ-मरा या'नी मालदारों से पांच सो[500] साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। ग़ौर कीजिये कि जब येह ह़लाल माल लाने वाले पांच सो[500] बरस तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़िसाब देंगे तो उस ह़राम ख़ोर या'नी सूदख़ोर का क्या अन्जाम होगा जो माले ह़राम ले कर रोज़े क़ियामत ह़ाज़िर होगा।

तीसरा इ़लाज क़नाअ़त :

ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि **शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "काम्याब हो गया जो मुसल्मान हुवा और ब क़-दरे किफ़ायत रिज़्क़ दिया गया और **अल्लाह** ने उसे दिये हुए पर क़नाअ़त दी।"(1)

और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की :

"اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ رِزْقَ آلِ مُحَمَّدٍ قُوْتاً"

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुह़म्मद के घर वालों की रोज़ी ब क़-दरे ज़रूरत मुक़र्रर फ़रमा।(2)

(۱) صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فی الکفاف والقناعۃ، الحدیث 1054، ص524

(۲) صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فی الکفاف والقناعۃ، الحدیث 1055، ص524

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन फ़रामीने मुबा-रका में उम्मत को येह बात समझाई जा रही है कि ब क़-दरे ज़रूरत माल पर क़नाअ़त करें, ज़ियादा माल की हवस में ज़लीलो ख़्वार न हों कि ज़ियादा माल की हवस ह़लाल व ह़राम की तमीज़ उठा देती है और फिर बन्दा सूद, रिश्वत, मिलावट और इस त़रह़ के दूसरे ज़राएअ़ इख़्तियार कर के अपनी दुन्या व आख़िरत दोनों को दाव पर लगा देता है।

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन अह़ादीसे मुबा-रका में काम्याबी के चार म-दनी फूल बयान किये गए हैं : (1) ईमान (2) तक़्वा (3) ब क़-दरे ज़रूरत माल और (4) थोड़े माल पर सब्र। जिसे येह ने'मतें नसीब हो गईं उस पर रब्बे करीम का बड़ा फ़ज़्लो करम हो गया, वोह काम्याब रहा और दुन्या से काम्याब गया।

ऐ काश ! हमें क़नाअ़त नसीब हो जाए, क्यूं कि जो क़नाअ़त पसन्द हो वोह सा-दगी अपनाता है, सादा ग़िज़ा और लिबास को काफ़ी जानता है, उसे दौलत की ह़ाजत होती है न दौलत मन्द की। और जो क़नाअ़त पसन्द न हो, वोह ह़िर्स व लालच का शिकार हो जाता है, कभी सैर नहीं होता, हर वक़्त उस पर धन कमाने की धुन सुवार होती है, यहां तक कि मौत आ पहुंचती है।

क़नाअ़त येह है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब तुम्हें सख़्त भूक लगे

एक रोटी और पानी के एक पियाले पर गुज़ारा करो और कह दो मैं दुन्या और अहले दुन्या को छोड़ता हूं।''(1)

क़नाअ़त से इ़ज़्ज़त है :

ह़ज़रते मौलाए काएनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि **जिस ने क़नाअ़त की उस ने इ़ज़्ज़त पाई और जिस ने लालच किया ज़लील हुवा।**(2)

लोगों के माल से ना उम्मीद हो जाओ :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक देहाती ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे एक मुख़्तसर वसिय्यत फ़रमाइये।'' फ़रमाया : ''जब नमाज़ पढ़ो तो ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ (समझ कर) पढ़ो और **हरगिज़ ऐसी बात न करो जिस से तुम्हें कल मा'ज़िरत करना पड़े और लोगों के पास जो कुछ है उस से ना उम्मीद हो जाओ।**''(3)

इन्सान के पेट को मिट्टी ही भर सकती है :

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''अगर इन्सान

(۱) شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، الحدیث: 10366، ج7، ص295

(۲) النھایۃ للجزری، باب القاف مع النون، ج4، ص100

(۳) المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی ایوب الانصاری، الحدیث: 23557، ج9، ص130

के लिये माल की दो वादियां हों तो वोह तीसरी वादी की तमन्ना करेगा और **इन्सान के पेट को सिर्फ़ मिट्टी ही भर सकती है** और जो शख़्स तौबा करता है तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है।"(1)

मीठे मीठे और प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने कभी भी किसी मालदार को येह कहते नहीं सुना होगा कि "बहुत माल कमा लिया। अब बस।" बल्कि वोह मज़ीद दौलत कमाने की कोशिश करता रहता है। और इसी त़रह़ कोई अ़ालिम ऐसा नहीं मिलेगा कि जो येह कहे : "बहुत पढ़ लिया, अब मुझे मज़ीद पढ़ने की ह़ाजत नहीं।" बल्कि हर अ़ालिम मज़ीद इ़ल्म की त़लब में रहता है। चुनान्चे,

हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : "दो ह़रीस कभी सैर नहीं हो सकते, एक माल का ह़रीस और दूसरा इ़ल्म का ह़रीस।"(2)

दूसरे के माल के आसरे पर रहना कि वोह मुझ से बहुत मह़ब्बत करता है, ख़ुद ही मुझे ऑफ़र भी करता रहता है कि जब भी ज़रूरत हो कह दिया करो। इस लिये कभी ज़रूरत पड़ी तो उस से मांग लूंगा, मन्अ़ नहीं करेगा वग़ैरा उम्मीदें बहुत ही खोखली हैं कि आदमी का दिल बदलता रहता है। याद रखिये ! "**देने वाला**" इन्सान "**लेने वाले**" से मु–तअस्सिर नहीं हो सकता। अलबत्ता ! अगर कोई देने आए और आप क़बूल नहीं करेंगे तो ज़रूर मु–तअस्सिर होगा। चुनान्चे,

---

(۱)صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب لو ان لابن ادم۔۔۔الخ، الحدیث1048، ص521

(۲)المستدرك للحاكم، كتاب العلم، باب منهومان لا يشبعان، الحديث:318، ج1، ص282

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने **एह़याओ उ़लूमिद्दीन** में येह अ़-रबी अश्आ़र नक़्ल किये हैं :

اَلْعَیْشُ سَاعَاتٌ تَمُرُّ
وَخُطُوبُ أَیَّامٍ تَکُرُّ

तरजमा : ऐश चन्द घड़ियों का है जो गुज़र जाएगा और चन्द दिनों में ह़ालत बदल जाएगी।

اِقْنَعْ بِعَیْشِكَ تَرْضَهُ
وَاتْرُكْ هَوَاكَ تَعِیْشُ حُرٌّ

तरजमा : अपनी ज़िन्दगी में क़नाअ़त इख़्तियार कर, राज़ी रहेगा। और अपनी ख़्वाहिश तर्क कर दे, आज़ादी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेगा।

فَلِرُبَّ حَتْفٍ سَاقَهُ
ذَهَبٌ وَّیَاقُوْتٌ وَّدُرٌّ

तरजमा : कई बार मौत सोने, याक़ूत और मोतियों के सबब डाकूओं के ज़रीए आती है।[1]

मज़ीद नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुश्क रोटी को पानी में तर कर के खाते थे और फ़रमाते : ''जो शख़्स इस पर क़नाअ़त करता है वोह कभी किसी का मोह़ताज नहीं रहता।''[2]

(۱)إحیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان ذم الحرص والطمع ومدح القناعة والیأس مما فی أیدی الناس، ج3، ص295

(۲)المرجع السابق

سُبْحٰنَ الله ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

ह़ज़रते सय्यिदुना समीत़ बिन अ़जलान رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "ऐ इन्सान ! तेरा पेट बहुत मुख़्तसर या'नी फ़क़त़ एक बालिश्त मकअ़-अ़ब है, या'नी एक बालिश्त चोरस, चकौर ही तो है तो फिर वोह तुझे दोज़ख़ में क्यूं ले जाए ?" और किसी दाना से पूछा गया : "आप का माल क्या है ?" उन्हों ने जवाब दिया : "ज़ाहिर में अच्छी ह़ालत में रहना, बात़िन में मियाना रवी इख़्तियार करना और जो कुछ लोगों के पास है उस से मायूस होना ।"(1)

क़नाअ़त पसन्द को बादशाहों से क्या काम ?

ह़ज़रते सय्यिदुना **क़बीसा बिन उ़क़्बा** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه से मिलने के लिये एक रोज़ कोहिस्तानी अ़लाक़े का शहज़ादा अपने ख़ुद्दाम के साथ ह़ाज़िर हुवा, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने मकान से निकलने में काफ़ी देर लगाई । इस पर उस के ख़ादिमों ने पुकार कर कहा : "हु़ज़ूर ! आप ﴿رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه﴾ के दरवाज़े पर **मलिकुल जिबाल** (या'नी पहाड़ों के बादशाह) का शहज़ादा खड़ा है और आप हैं घर से निकलते नहीं ।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना **क़बीसा** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه चन्द रोटी के सूखे टुकड़े लिये बाहर तशरीफ़ लाए और दिखाते हुए इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स दुन्या में इतने ही पर क़नाअ़त कर के राज़ी हो चुका हो उस को **मलिकुल जिबाल** से क्या काम ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस से बात भी नहीं करूंगा ।"(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।*

---

(۱)إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل، بيان ذم الحرص ـ ـ الخ، ج3، ص295

(۲)تذكرة الحفاظ، الرقم 370 قبيصه بن عقبه، ج1، الجزء الاول، ص274

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! बे जा माल की महब्बत से छुटकारा पाने और क़नाअ़त की दौलत अपनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये। म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। नीज़ **मक-त-बतुल मदीना** से जारी होने वाले अमीरे अहले सुन्नत के मुख़्तलिफ़ रसाइल के मुता-लआ़ की आ़दत बना लीजिये। चुनान्चे,

अमीरे अहले सुन्नत की तह़रीर का असर :

मन्डन गढ़ ज़िल्अ़ रतना गरी महाराष्ट्र (हिन्द) के एक इस्लामी भाई ने बताया सि. 2002 ई. की बात है, मैं बुरे दोस्तों की सोह़बत के बाइ़स गुन्डा गेंग में शामिल हो गया, लोगों को मारना पीटना और गालियां बकना मेरा मा'मूल था, जान बूझ कर झगड़े मोल लेता, जो नया फ़ेशन आता सब से पहले मैं अपनाता, दिन में कई बार कपड़े तब्दील करता, सिवाए जीन्ज़ (Jeans) के दूसरी पेन्ट न पहनता, आवारा दोस्तों के साथ घूम फिर कर रात गए घर लौटता और दिन चढ़े तक सोता रहता, वालिद साह़िब का इन्तिक़ाल हो चुका था, बेवा मां समझाती तो ज़बान दराज़ी करता था।

एक मरतबा **दा'वते इस्लामी** के किसी बा इ़मामा इस्लामी भाई ने मुलाक़ात पर एक रिसाला **''जिन्नात का बादशाह''** (जिस में हुज़ूर ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का तज़्किरा है) मुझे तोह़फ़े में दिया, पढ़ा तो अच्छा लगा। **र-मज़ानुल मुबारक** में एक दिन किसी मस्जिद में जाने की सआ़दत मिली तो इत्तिफ़ाक़ से एक सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे और सफ़ेद लिबास में मल्बूस सन्जीदा

नौ जवान पर नज़र पड़ी, मा'लूम हुवा येह यहां मो'तकिफ़ हैं। उन्हों ने **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत** दिया तो मैं बैठ गया, बा'दे दर्स उन्हों ने मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल की ब-र-कतें बताईं, उन इस्लामी भाई का लिबास इस क़दर सादा था कि बा'ज़ जगह पैवन्द तक लगे हुए थे, जब उन के लिये घर से खाना आया तो वोह भी बिल्कुल सादा था, मैं उन की सा-दगी से बहुत मु-तअस्सिर हुवा, मुझे उन से महब्बत हो गई, मैं उन से मुलाक़ात के लिये आने जाने लगा।

इत्तिफ़ाक़ से **ईदुल फ़ित्र** के बा'द उन इस्लामी भाई का निकाह था, येह बेचारे ग़रीब और तंगदस्त थे मगर हैरत की बात येह थी कि उन्हों ने इस बात का मुझे ज़रा भी एहसास नहीं होने दिया और न ही किसी क़िस्म की माली इमदाद के लिये सुवाल किया। मैं और ज़ियादा मु-तअस्सिर हुवा مَاشَآءَاللّٰه **दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल** कितना प्यारा है, इस के वाबस्तगान किस क़दर सादा और ख़ुद्दार हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه **दा'वते इस्लामी** की महब्बत मेरे दिल में घर करती चली गई, यहां तक कि मैं ने आशिक़ाने रसूल के हमराह 8 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया। मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई, क़ल्ब में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं ने गुनाहों से सच्ची तौबा कर के अपनी ज़ात को **दा'वते इस्लामी** के हवाले कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मुझ पर वोह म-दनी रंग चढ़ा कि आज कल मैं अलाक़ाई मुशा-वरत के निगरान की हैसिय्यत से अपने अलाक़े में **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों की धूमें मचा रहा हूं।

सा-दगी चाहिये, आ़जिज़ी चाहिये

आप को गर, चलें क़ाफ़िले में चलो

ख़ूब ख़ुद्दारियां और ख़ुश अख़्लाक़ियां

आइये सीख लें, क़ाफ़िले में चलो

आ़शिक़ाने रसूल लाए सुन्नत के फूल

आओ लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को आ़फ़िय्यत और अमान अ़ता फ़रमा कर सूद की आफ़तों से महफ़ूज़ फ़रमाए।

सूद का चौथा इ़लाज मौत का तसव्वुर :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! सूद का येही सब से बड़ा इ़लाज है कि हर दम मौत को याद रखा जाए, मगर अफ़्सोस की बात तो येह है कि हम दुन्या की नैरंगियों में मश्गूल हो कर मौत से यक्सर ग़ाफ़िल हो चुके हैं और ह़राम रोज़ी की त़रफ़ बढ़ते ही चले जा रहे हैं, ऐसे लगता है गोया हर शख़्स येह सोच कर जी रहा है कि मैं ने मरना ही नहीं।

मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह आप की भूल है, याद रखिये ! जो दुन्या में पैदा हुवा है उसे ज़रूर मरना है।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है

कर ले जो करना है आख़िर मौत है

याद रख हर आन आख़िर मौत है
बन तू मत अन्जान आख़िर मौत है
मरते जाते हैं हज़ारों आदमी
आ़क़िलो नादान आख़िर मौत है
क्या ख़ुशी हो दिल को चन्दे ज़ीस्त से
ग़मज़दा है जान आख़िर मौत है
मुल्के फ़ानी में फ़ना हर शै को है
सुन लगा कर कान आख़िर मौत है
बारहा इ़ल्मी तुझे समझा चुके
मान या मत मान आख़िर मौत है

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या की नैरंगियों को समझने, मौत को याद करने और माल की महब्बत को दिल से निकालने की कोशिश कीजिये।

मौत से ग़फ़लत का सबब :

दुन्या और इस माल की, बड़े बड़े बंगलों और फ़ेक्टरियों की, बुलन्दो बाला महल्लात की ता'मीरात की और मालो ज़र की कसरत की महब्बत ने हमें सूद में मुब्तला कर दिया है। याद रखिये जब मौत आएगी हमारा क़िस्सा पूरा कर देगी, येह सब महल्लात, येह सारी दौलत, येह फ़ेक्टरियां और येह गाड़ियां सब यहीं रह जाएंगी। हमारा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ हमें तम्बीह फ़रमा रहा है पारह 22 सूरए फ़ातिर की आयत 5 में इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۵﴾ ﴿پ22، الفاطر:5﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें **अल्लाह** के हुक्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी।

और सूरए तकासुर में है :

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ﴿۱﴾

﴿پ30، التکاثر:1﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़-लबी ने।

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى **"ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान"** में इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि इस से मा'लूम हुवा कि कस्रते माल की ह़िर्स और इस पर मुफ़ा-ख़रत मज़्मूम है और इस में मुब्तला हो कर आदमी सआ़दते उख़्रविय्या से मह़रूम रह जाता है।

बांस की झोंपड़ी :

यक़ीनन जो मौत और इस के बा'द वाले मुआ़-मले से आगाह है वोह दुन्या की रंगीनियों और इस की आसाइशों या'नी सूद और रिश्वत के धोके में नहीं पड़ सकता। चुनान्चे,

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने एक सादा सी बांस की झोंपड़ी में रिहाइश इख़्तियार फ़रमाई, अ़र्ज़ की गई : "बेहतर था कि आप एक उ़म्दा मकान ता'मीर फ़रमा लेते।" फ़रमाया : "जो मर जाएगा

(या'नी जिस को मौत का यक़ीन है) उस के लिये येह भी बहुत है।"(1)

मौत से ग़फ़्लत :

अफ़्सोस कि हम मौत की जानिब अ़दम तवज्जोह के सबब दुन्या में उ़म्दा उ़म्दा मकानात की ता'मीरात में मश्ग़ूल हैं। हम अपने मकानात को इंग्लिश टाइल्ड बाथ (English tiled bath) अमरीकन किचन (American kitchen), मार्बल फ़्लोरिंग (Marble Flooring), वॉर्ड रोब (Ward robe), फुल वूड वर्क (Wood work), एक्सट्रा वर्क (Extra work) से ख़ूब सजाते हैं।

एक अ़-रबी शाइ़र ने किस क़दर दर्द भरे अन्दाज़ में हमें समझाने की कोशिश की है, मुला-ह़ज़ा हो :

زَيَّنْتَ بَيْتَكَ جَاهِلاً وَّعَمَرْتَهُ

وَلَعَلَّ غَيْرُكَ صَاحِبَ الْبَيْتِ

या'नी (दुन्या की ह़क़ीक़त और आख़िरत की मा'रिफ़त से) जहालत की बिना पर तू अपने मकान को ज़ीनत देने और सिर्फ़ इसी को आबाद करने में लगा हुवा है। और शायद (तेरे मरने के बा'द) इस मकान का मालिक तेरा ग़ैर होगा।

مَنْ كَانَتِ الْاَيَّامُ سَائِرَةً بِهٖ

فَكَأَنَّهُ قَدْ حَلَّ بِالْمَوْتِ

या'नी जिस को अय्याम (की गाड़ी क़ब्र की त़रफ़) खींचती चली जा रही है वोह गोया मौत से मिल चुका या'नी बहुत जल्द मर जाएगा।

مدینہ

(۱)العقد الفرید، باب قولھم فی الموت،ج3،ص146

وَالْمَرْءُ مُرْتَهِنٌ بِسَوْفَ وَلَيْتَ

وَهَلَاكُهُ فِي السَّوْفِ وَاللَّيْتِ

तरजमा : और आदमी (दुन्यावी मक़ासिद के हुसूल में) उम्मीद व रजा के फन्दे में गिरिफ़्तार है ह़ालां कि इन्हीं झूटी उम्मीदों में इस की हलाकत पोशीदा है।

فَلِلّٰهِ دُرُّ فَتىً تَدَبَّرَ اَمْرَهُ

فَغَدَا وَرَاحَ مُبَادِرَ الْمَوْتِ

तरजमा : उस जवान का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (के ज़िम्मए करम) पर है जिस ने अपने (क़ब्र व आख़िरत के) मुआ़-मले की तदबीर की और सुब्ह़ व शाम मौत की तय्यारी करने में जल्दी की।[1]

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! ऐ काश ! हमारे पेशे नज़र मौत का तसव्वुर हो जाए और इस दुन्या की आ़रिज़ी ज़िन्दगी में हमें म-दनी सोच नसीब हो जाए। **ऐ काश !** माल जम्अ़ करने की हवस, हम सब के दिलों से निकल जाए, इस माल व दुन्या की मह़ब्बत ने हमें तबाह व बरबाद कर के रख दिया और हमारा मुआ़-शरा इस माल की मह़ब्बत में सूद जैसी ला'नत में मुब्तला हो गया है।

आप ने सूद की हलाकत ख़ेज़ियां तो जान लीं, **ऐ काश !** अगर हमारे दिल से माल, उ़म्दा ता'मीरात और जाह व इ़ज़्ज़त की त़लब व मह़ब्बत निकल जाए और माल की वोह सूरत व मा'रिफ़त जो बुज़ुर्गों को ह़ासिल थी हमें नसीब हो जाए। चुनान्चे,

مــــدينــه

(۱) العقد الفريد، باب قولهم في الموت، ج3، ص146

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 366 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : ''**ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो दिरहम (या'नी दौलत) की इ़ज़्ज़त करता है, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त उसे ज़िल्लत देता है।'' (2) मन्क़ूल है, सब से पहले दिरहम व दीनार बने तो शैत़ान ने उन को उठा कर अपनी पेशानी पर रखा फिर उन को चूमा और बोला : ''जिस ने इन से मह़ब्बत की वोह मेरा ग़ुलाम है।'' (العیاذباللہ) (3) ह़ज़रते सय्यिदुना समीत़ बिन अ़जलान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان ने फ़रमाया : ''दिरहम व दीनार (माल व दौलत) मुनाफ़िक़ों की लगामें हैं वोह इन के ज़रीए़ दोज़ख़ की त़रफ़ खींचे जाएंगे।''

ग़फ़लत का अन्जाम :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला आप को और मुझ गुनाहगार को माल व दौलत की मह़ब्बत से मह़फ़ूज़ फ़रमाए। आज हम दीवाना वार माल व दौलत की हवस में अन्धे हो गए हैं, अपने बीवी बच्चों का पेट पालने के लिये त़रह़ त़रह़ के ह़ीले बहाने बनाते हैं कि मैं बीवी बच्चों का पेट पाल रहा हूं, उन के लिये कमा रहा हूं, क्या करूं ह़राम रोज़ी कमाने के सिवा कोई चारा ही नहीं। अरे नादान इस्लामी भाई ! तुम्हें क्या हो गया ? बीवी बच्चों का पेट पालने और इन को ऐ़शो इ़शरत की ज़िन्दगी देने के

लिये ह़राम रोज़ी कमाने में मसरूफ़ हो गए और इन की दीने इस्लाम के सुनह्री उसूलों के मुत़ाबिक़ तरबिय्यत करने और इन्हें ह़लाल लुक़्मे खिलाने से ग़ाफ़िल हो गए, तुम्हें क्या पता कि क़ियामत के दिन अपने बीवी बच्चों को इ़ल्मे दीन न सिखाने और ह़राम रोज़ी खिलाने का कैसा वबाल सामने आएगा। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 146 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**क़ुर्रतुल उ़यून**'' सफ़ह़ा 93 पर है कि मर्द से तअ़ल्लुक़ रखने वालों में पहले उस की ज़ौजा और उस की औलाद है, येह सब (या'नी बीवी, बच्चे क़ियामत में) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने खड़े हो कर अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हमें इस शख़्स से हमारा ह़क़ ले कर दे, क्यूं कि इस ने कभी हमें दीनी उमूर की ता'लीम नहीं दी और येह हमें ह़राम खिलाता था जिस का हमें इ़ल्म न था।'' फिर उस शख़्स को ह़राम कमाने पर इस क़दर मारा जाएगा कि उस का गोश्त झड़ जाएगा फिर उस को मीज़ान के पास लाया जाएगा, फ़िरिश्ते पहाड़ के बराबर उस की नेकियां लाएंगे तो उस के इ़याल में से एक शख़्स आगे बढ़ कर कहेगा : ''मेरी नेकियां कम हैं।'' तो वोह उस की नेकियों में से ले लेगा, फिर दूसरा आ कर कहेगा : ''तूने मुझे सूद खिलाया था।'' और उस की नेकियों में से ले लेगा इस त़रह़ उस के घर वाले उस की सब नेकियां ले जाएंगे और वोह अपने अहलो इ़याल की त़रफ़ ह़स्रतो यास से देख कर कहेगा : ''अब मेरी गरदन पर वोह गुनाह व मज़ालिम रह गए जो मैं ने

तुम्हारे लिये किये थे।'' (उस वक़्त) फ़िरिश्ते कहेंगे : ''येह वोह (बद नसीब) शख़्स है जिस की नेकियां इस के घर वाले ले गए और येह उन की वजह से जहन्नम में चला गया।''(1)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो !

- क्या अब भी ह़राम रोज़ी से बाज़ नहीं आएंगे ?
- क्या अब भी सूद और रिश्वत के लैन दैन से बाज़ नहीं आएंगे ?
- क्या अब भी ख़ियानत से बाज़ नहीं आएंगे ?
- क्या अब भी अपने इजारे में ख़ियानत करते रहेंगे ?
- क्या अब भी इस निय्यत से सरकारी मुला-ज़मत इख़्तियार करेंगे कि वहां तो बड़ी छूट है, ख़ूब छुट्टियां भी करेंगे और तन-ख़्वाह भी पूरी लेंगे और फिर इस माले ह़राम से बीवी बच्चों का पेट पालेंगे ?
- क्या अब भी तिजारत का इ़ल्म नहीं सीखेंगे ?

याद रखिये कि ताजिर पर लाज़िम है कि वोह तिजारत के मसाइल सीखे ताकि जान सके कि किस त़रह़ रोज़ी ह़लाल होगी और किस त़रह़ ह़राम ? चुनान्चे,

(1) कुर्रतुल उ़यून, स. 93

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफहात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" के हि़स्सा 16 सफ़ह़ा 121 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह,** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "जब तक ख़रीद व फ़रोख़्त के मसाइल मा'लूम न हों कि कौन सी बैअ़ जाइज़ है और कौन ना जाइज़, उस वक़्त तक तिजारत न करे।"

और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाया करते कि हमारे बाज़ार में वोही शख़्स आए जो दीन में फ़क़ीह या'नी आ़लिम हो और सूदख़ोर न हो।[1]

आह सद अफ़्सोस ! आजकल मुआ़-मला इस के बर अ़क्स है, आजकल लोग ज़बाने क़ाल से न सही मगर ज़बाने ह़ाल से معاذاللہ ज़रूर कहते हैं कि हमारे बाज़ार में सिर्फ़ वोही शख़्स आए जो सब से बड़ा धोके बाज़ हो। اَلۡعَیَاذُ بِاللّٰہ। शरीफ़ आदमी का तो गोया बाज़ार में दाख़िला ही मम्नूअ़ है। आजकल जिस त़रह़ ह़राम रोज़ी और सूद का इरतिकाब किया जाता है किसी पर पोशीदा नहीं। यक़ीनन इस की बड़ी वजह इ़ल्मे दीन और सुन्नतों भरे माह़ोल से दूरी है। ताजिरों और ख़रीदारों सब के लिये लाज़िम है कि जल्द अज़ जल्द ख़रीद व फ़रोख़्त के मसाइल सीख लें। वरना **मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो !** याद रखिये ! आख़िरत में एक एक ज़र्रे का ह़िसाब होगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पकड़ बड़ी शदीद है।

مدینہ

(۱) الجامع لاحکام القرآن للقرطبی، البقرۃ، تحت الایۃ:279، 2، الجزء الثالث، ص 267

पांचवां इ़लाज सूद से बचने का ह़ीला :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! जहां तक मुम्किन हो सके सूदी कारोबार से अपने आप को महफ़ूज़ रखने की कोशिश कीजिये। इस लिये कि अगर हम ने इ़ल्म और उ़-लमाए किराम से अपना तअ़ल्लुक़ उस्तुवार रखा होता तो वोह यक़ीनन हमें सूद की नुहूसत से बचाव का कोई ह़ल तज्वीज़ फ़रमाते। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 108 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''चन्दे के बारे में सुवाल जवाब''** सफ़ह़ा 65 ता 67 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ह़ीले के शर-ई दलाइल के बारे में पूछे गए एक सुवाल का जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं कि ह़ीलए शर-ई का जवाज़ क़ुरआनो ह़दीस और फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मो'तबर कुतुब में मौजूद है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बीमारी के ज़माने में आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا एक बार ख़िदमते सरापा अ़-ज़मत में ताख़ीर से ह़ाज़िर हुईं तो आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़सम खाई कि ''मैं तन्दुरुस्त हो कर 100 कोड़े मारूंगा।'' सिह़्ह़त याब होने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें 100 तीलियों की झाड़ू मारने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया :[1]

(1) नूरुल इरफ़ान, स. 728, मुलख़्ख़सन

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला पारह 23 सूरए ص की आयत नम्बर 44 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ ﴿پ23، ص44﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक (सो तिन्कों वाला) झाड़ू ले कर उस से मार दे और क़सम न तोड़ ।

"**आ़लमगीरी**" में ह़ीलों का एक मुस्तक़िल बाब है जिस का नाम "**किताबुल ह़ियल**" है। चुनान्चे, "आ़लमगीरी किताबुल ह़ियल" में है, "जो ह़ीला किसी का ह़क़ मारने या उस में शुबा पैदा करने या बात़िल से फ़रेब देने के लिये किया जाए वोह मक्रूह है और जो ह़ीला इस लिये किया जाए कि आदमी ह़राम से बच जाए या ह़लाल को ह़ासिल कर ले वोह अच्छा है। इस क़िस्म के ह़ीलों के जाइज़ होने की दलील **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान है :

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ ﴿پ23، ص44﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक (सो तिन्कों वाला) झाड़ू ले कर उस से मार दे और क़सम न तोड़ ।[1]

कान छेदने का रवाज कब से हुवा ?

ह़ीले के जवाज़ पर एक और दलील मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि एक बार ह़ज़रते सय्यि-दतुना सारह और ह़ज़रते सय्यि-दतुना हाजिरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا

مدینہ

(۱)فتاویٰ عالمگیری، ج۶، ص۳۹۰

में कुछ चप-क़लिश हो गई । ह़ज़रते सय्यि-दतुना सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने क़सम खाई कि मुझे अगर क़ाबू मिला तो मैं हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का कोई उ़ज़्व काटूंगी ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में भेजा कि इन में सुल्ह़ करवा दें । ह़ज़रते सय्यि-दतुना सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने अ़र्ज़ की : ''مَاحِیلَۃُ یَمِیۡنِی؟'' या'नी मेरी क़सम का क्या ह़ीला होगा ? तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर वह़्य नाज़िल हुई कि (ह़ज़रते) सारह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) को हुक्म दो कि वोह (ह़ज़रते) हाजिरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) के कान छेद दें । उसी वक़्त से औ़रतों के कान छेदने का रवाज पड़ा ।[1]

सूद से बचने की सूरतें :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''बहारे शरीअ़त'' जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 776 ता 779 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत़्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने जिस त़रह़ सूद लेना ह़राम फ़रमाया सूद देना भी ह़राम किया है । ह़दीसों में दोनों पर ला'नत फ़रमाई है और फ़रमाया कि दोनों बराबर हैं । आजकल सूद की इतनी कसरत है कि क़र्ज़े ह़सन जो बिग़ैर सूदी होता है बहुत कम पाया जाता है दौलत वाले किसी को बिग़ैर नफ़्अ़ रूपिया देना चाहते नहीं

(۱) غمزعیون البصائرشرح الاشباہ والنظائر، ج۳، ص۲۹۵

और अहले ह़ाजत अपनी ह़ाजत के सामने इस का लिह़ाज़ भी नहीं करते कि सूदी रूपिया लेने में आख़िरत का कितना अ़ज़ीम वबाल (बहुत बड़ा अ़ज़ाब) है इस से बचने की कोशिश की जाए। लड़की लड़के की शादी। ख़तना और दीगर तक़रीबाते शादी व ग़मी में अपनी वुस्अ़त से ज़ियादा ख़र्च करना चाहते हैं। बरादरी और ख़ानदान के रुसूम में इतने जकड़े हुए हैं (फंसे हुए हैं) कि हर चन्द कहिये एक नहीं सुनते, रुसूम में कमी करने को अपनी ज़िल्लत समझते हैं। हम अपने मुसल्मान भाइयों को अव्वलन तो येही नसीह़त करते हैं कि इन रुसूम की जन्जाल (बोझ, आफ़त) से निकलें, चादर से ज़ियादा पाउं न फैलाएं और दुन्या व आख़िरत के तबाह कुन नताइज से डरें। थोड़ी देर की मुसर्रत (ख़ुशी) या अबनाए जिन्स में नाम आ-वरी (या'नी क़बीले के अफ़राद में शोहरत) का ख़याल कर के आइन्दा ज़िन्दगी को तल्ख़ (दुश्वार) न करें। अगर येह लोग अपनी हट से बाज़ न आएं क़र्ज़ का बारे गिरां (भारी बोझ) अपने सर ही रखना चाहते हैं बचने की सअ़ूय (कोशिश) नहीं करते जैसा कि मुशा-हदा इसी पर शाहिद है तो अब हमारी दूसरी फ़ह्माइश उन मुसल्मानों को येह है कि सूदी क़र्ज़ के क़रीब न जाएं।

इस लिये कि ब नस्से क़त़ई इस में ब-र-कत नहीं और मुशा-हदात व तजरिबात भी येही हैं कि बड़ी बड़ी जाएदादें सूद में तबाह हो चुकी हैं येह सुवाल इस वक़्त पेशे नज़र है कि जब सूदी क़र्ज़ न लिया जाए तो बिग़ैर सूदी क़र्ज़ कौन देगा फिर उन दुश्वारियों को किस त़रह़ ह़ल किया जाए। इस के लिये हमारे उ़-लमाए किराम ने चन्द सूरतें ऐसी तह़रीर फ़रमाई हैं कि उन त़रीक़ों पर अ़मल किया जाए तो सूद की नजासत व नुहूसत (नापाकी और बुरे असर) से

पनाह मिलती है और क़र्ज़ देने वाला जिस ना जाइज़ नफ़्अ़ का ख़्वाहिश मन्द था उस के लिये जाइज़ त़रीक़े पर नफ़्अ़ ह़ासिल हो सकता है। सिर्फ़ लैन दैन की सूरत में कुछ तरमीम (तब्दीली) करनी पड़ेगी। मगर ना जाइज़ व ह़राम से बचाव हो जाएगा।

शायद किसी को येह ख़याल हो कि दिल में जब येह है कि सो (100) दे कर एक सो दस (110) लिये जाएं। फिर सूद से क्यूंकर बचे हम उस के लिये येह वाज़ेह़ करना चाहते हैं कि शर-ए मुत़ह्हर ने जिस अ़क़्द को जाइज़ बताया वोह मह्ज़ इस तख़य्युल (क़ियास, ख़याल) से ना जाइज़ व ह़राम नहीं हो सकता। देखो अगर रुपै से चांदी ख़रीदी और एक रूपिया की एक भर से ज़ाइद ली येह यक़ीनन सूद व ह़राम है। साफ़ ह़दीस में तसरीह़ है, "اَلْفِضَّةُ بِالْفِضَّةِ مَثَلاً بِمَثَلٍ يَداً بِيَدٍ وَالْفَضْلُ رِبًا" और अगर म-सलन एक गनी (सोने का एक इंग्रेज़ी सिक्का) जो पन्दरह रुपै की हो उस से पच्चीस रुपै भर या और ज़ियादा चांदी ख़रीदी या सोलह आने पैसों की दो रूपिया भर ख़रीदी अगर्चे इस का मक़्सूद भी वोही है कि चांदी ज़ियादा ली जाए मगर सूद नहीं और येह सूरत यक़ीनन ह़लाल है, ह़दीसे सह़ीह़ में फ़रमाया : "اِذَا اِخْتَلَفَ النَّوْعَانِ فَبِيْعُوْا كَيْفَ شِئْتُمْ" मा'लूम हुवा कि जवाज़ व अ-दमे जवाज़ नौइय्यते अ़क़्द पर है। अ़क़्द बदल जाएगा हुक्म बदल जाएगा। इस मस्अले को ज़ियादा वाज़ेह़ करने के लिये हम दो[2] ह़दीसें ज़िक्र करते हैं :

सह़ीह़ैन में अबू सईद ख़ुदरी व अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी, कहते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को ख़ैबर का ह़ाकिम बना कर भेजा था, वोह वहां से हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में उ़म्दा खजूरें लाए। इर्शाद फ़रमाया : ''क्या ख़ैबर की सब खजूरें ऐसी होती हैं ?'' अ़र्ज़ की, नहीं **या रसूलल्लाह** ! ﷺ हम दो साअ़ के बदले इन खजूरों का एक साअ़ लेते हैं और तीन साअ़ के बदले दो साअ़ लेते हैं। फ़रमाया : ''ऐसा न करो, मा'मूली खजूरों को रूपिये से बेचो फिर रूपिये से इस क़िस्म की खजूरें ख़रीदा करो और तोल की चीज़ों में भी ऐसा ही फ़रमाया।''(1)

सह़ीह़ैन में अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बरनी खजूरें लाए। इर्शाद फ़रमाया : ''कहां से लाए ?'' अ़र्ज़ की, हमारे यहां ख़राब खजूरें थीं, उन के दो साअ़ को इन के एक साअ़ के इ़वज़ (बदले) में बेच डाला। इर्शाद फ़रमाया : ''अफ़्सोस येह तो बिल्कुल सूद है, येह तो बिल्कुल सूद है, ऐसा न करना हां अगर इन के ख़रीदने का इरादा हो तो अपनी खजूरें बेच कर फिर इन को ख़रीदो।''(2)

(۱) صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب اذا اراد بیع تمر...إلخ، الحدیث: ۲۲۰۱، ۲۳۰۲، ج۲، ص۴۴، ۷۹.

(۲) صحیح البخاری، کتاب الوکالۃ، باب اذا باع الوکیل...إلخ، الحدیث: ۲۳۱۲، ج۲، ص۸۳.

इन दोनों ह़दीसों से वाज़ेह़ हुवा कि बात वोही है कि उ़म्दा खजूरें ख़रीदना चाहते हैं मगर अपनी खजूरें ज़ियादा दे कर लेते हैं सूद होता है। और अपनी खजूरें रूपिये से बेच कर अच्छी खजूरें ख़रीदें येह जाइज़ है। इसी वजह से इमाम क़ाज़ी ख़ां अपने फ़तावा में सूद से बचने की सूरतें लिखते हुए येह तह़रीर फ़रमाते हैं : وَ مثل ھذا روی عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم انہ امر بذلک۔[1]

इस मुख़्तसर तम्हीद के बा'द **सदरुश्शरीअ़ह** सूद से बचने के बारे में उ़-लमा से मरवी चार सूरतें बयान करते हुए फ़रमाते हैं :

﴾1﴿ : एक शख़्स के दूसरे पर दस रुपै थे उस ने मदयून से कोई चीज़ उन दस रुपौं में ख़रीद ली और मबीअ़ पर क़ब्ज़ा भी कर लिया फिर उसी चीज़ को मदयून के हाथ बारह में समन वुसूल करने की एक मीआ़द मुक़र्रर कर के बेच डाला अब इस के उस पर दस की जगह बारह हो गए और इसे दो रुपै का नफ़अ़ हुवा और सूद न हुवा।[2] (خانیہ)

﴾2﴿ एक ने दूसरे से क़र्ज़ त़लब किया वोह नहीं देता अपनी कोई चीज़ मक़्रिज़ (क़र्ज़ देने वाले) के हाथ सो रुपै में बेच डाली उस ने सो रुपै दे दिये और चीज़ पर क़ब्ज़ा कर लिया फिर मुस्तक़्रिज़ (क़र्ज़ लेने वाले) ने वोही चीज़ मक़्रिज़ से साल भर के वा'दे पर एक सो दस रुपै में ख़रीद ली येह बैअ़ जाइज़ है। मक़्रिज़ ने सो रुपै दिये और एक सो दस रुपै मुस्तक़्रिज़ के ज़िम्मे लाज़िम हो गए और

مـــدینــــہ

(۱) الفتاوی الخانیۃ، کتاب البیع، فصل فیمایکون فرارًا عن الربا، ج۲، ص۴۰۸

(۲) المرجع السابق

अगर मुस्तक़्रिज़ के पास कोई चीज़ न हो जिस को इस तरह बैअ़ करे तो मक़्रिज़ मुस्तक़्रिज़ के हाथ अपनी कोई चीज़ एक सो दस रुपै में बैअ़ करे और क़ब्ज़ा दे दे फिर मुस्तक़्रिज़ उस की ग़ैर के हाथ सो रुपै में बेचे और क़ब्ज़ा दे दे फिर उस शख़्से अजनबी से मक़्रिज़ सो रुपै में ख़रीद ले और समन अदा कर दे और वोह मुस्तक़्रिज़ को सो रुपै समन अदा कर दे। नतीजा येह हुवा कि मक़्रिज़ की चीज़ उस के पास आ गई और मुस्तक़्रिज़ को सो रुपै मिल गए मगर मक़्रिज़ के उस के ज़िम्मे एक सो दस रुपै लाज़िम रहे।[1] (خانیہ)

(3) मक़्रिज़ ने अपनी कोई चीज़ मुस्तक़्रिज़ के हाथ तेरह रुपै में छ महीने के वा'दे पर बैअ़ की और क़ब्ज़ा दे दिया फिर मुस्तक़्रिज़ ने उसी चीज़ को अजनबी के हाथ बेचा और उस बैअ़ का इक़ाला कर के फिर उसी को मक़्रिज़ के हाथ दस रुपै में बेचा और रुपै ले लिये इस का भी येह नतीजा हुवा कि मक़्रिज़ की चीज़ वापस आ गई और मुस्तक़्रिज़ को दस रुपै मिल गए मर मक़्रिज़ के उस के ज़िम्मे तेरह रुपै[2] वाजिब हुए।[3] (خانیہ)

مــــــدینــــہ

(۱)الفتاوی الخانیة، کتاب البیع، فصل فیمایکون فرارأعن الربا،ج۱،ص۴۰۸

(2) इस सूरत में अगर्चे येह बात हुई कि जो चीज़ जितने में बैअ़ की क़ब्ल नक़्द समन मुश्तरी से उस से कम में ख़रीदी मगर चूंकि इस सूरते मफ़रूज़ा में एक बैअ़ जो अजनबी से हुई दरमियान में फ़ासिल हो गई लिहाज़ा येह बैअ़ जाइज़ है।

(۳)الفتاوی الخانیة، کتاب البیع، فصل فیمایکون فرارأعن الربا،ج۱،ص۴۰۸

﴾4﴿ : सूद से बचने की एक सूरत बैए़ ईना है इमाम मुह़म्मद رَحِمَہُ اللّٰہِ تَعَالٰی ने फ़रमाया : बैए़ ईना मक्रूह है क्यूं कि क़र्ज़ की ख़ूबी और ह़ुस्ने सुलूक से मह़ज़ नफ़अ़ की ख़ात़िर बचना चाहता है और इमाम अबू यूसुफ़ رَحِمَہُ اللّٰہِ تَعَالٰی ने फ़रमाया कि : अच्छी निय्यत हो तो इस में ह़रज नहीं बल्कि बैअ़ करने वाला मुस्तह़िक़े सवाब है क्यूं कि वोह सूद से बचना चाहता है । मशाइख़े बल्ख़ ने फ़रमाया : बैए़ ईना हमारे ज़माने की अक्सर बैओं से बेहतर है । बैए़ ईना की सूरत येह है एक शख़्स ने दूसरे से म-सलन दस रुपै क़र्ज़ मांगे उस ने कहा मैं क़र्ज़ नहीं दूंगा येह अलबत्ता कर सकता हूं कि येह चीज़ तुम्हारे हाथ बारह रुपै में बेचता हूं अगर तुम चाहो ख़रीद लो इसे बाज़ार में दस रुपै को बैअ़ कर देना तुम्हें दस रुपै मिल जाएंगे और काम चल जाएगा और इसी सूरत से बैअ़ हुई । बाएअ़ (बेचने वाले) ने ज़ियादा नफ़अ़ ह़ासिल करने और सूद से बचने का येह ह़ीला निकाला कि दस की चीज़ बारह में बैअ़ कर दी उस का काम चल गया और ख़ात़िर ख़्वाह इस को नफ़अ़ मिल गया । बा'ज़ लोगों ने इस का येह त़रीक़ा बताया है कि तीसरे शख़्स को अपनी बैअ़ में शामिल करें या'नी मक़्रिज़ (क़र्ज़ ख़्वाह, क़र्ज़ देने वाला) ने क़र्ज़दार के हाथ उस को बारह में बेचा और क़ब्ज़ा दे दिया फिर क़र्ज़दार ने सालिस के हाथ दस रुपै में बेच कर क़ब्ज़ा दे दिया उस ने मक़्रिज़ के हाथ दस रुपै में बेचा और क़ब्ज़ा दे दिया और दस रुपै समन के मक़्रिज़ से वुसूल कर के क़र्ज़दार को दे दे नतीजा येह हुवा कि क़र्ज़ मांगने वाले को दस रुपै वुसूल हो गए मगर बारह देने पड़ेंगे क्यूं कि वोह चीज़ बारह में ख़रीदी है ।[1] (خانیہ، فتح، ردالمحتار)

---

(۱)الفتاوی الخانیۃ،کتاب البیع، فصل فیما یکون فراراً عن الربا،ج۱،ص۴۰۸.وفتح القدیر، کتاب الکفالۃ،ج۶،ص۳۲۴- وردالمحتار، کتاب البیوع، باب الصرف، مطلب:فی بیع العینۃ،ج۷،ص۵۷۶

मिलावट वाले कारोबार से तौबा :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन सीखने और सुन्नतें सीखने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले भी हैं, दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की बड़ी ब-र-कतें हैं, इस माहोल से वाबस्ता हो कर मुआ़-शरे के बिगड़े हुए लोग सुन्नतों के पैकर बन गए। चुनान्चे,

बाबुल मदीना म-दनी पूरा जिसे **भीमपूरा** भी कहते हैं, के एक इस्लामी भाई का बयान है, उस का लुब्बे लुबाब कुछ यूं है : वोह कहते हैं कि मैं ऐसा बे नमाज़ी था कि जुमुआ़ की नमाज़ भी नहीं पढ़ता था। ख़ुश क़िस्मती से मैं ने **तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के तहूत गुलज़ारे मदीना मस्जिद आगरा ताज में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक** 2004 **ई. ब मुताबिक़** 1425 **हि. के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठने की सआ़दत हासिल की।** दस दिन में आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत ने मेरी क़ल्बी कैफ़िय्यत को बदल कर रख दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने कुछ न कुछ नमाज़ सीख ली और पांचों वक़्त की नमाज़े बा जमाअ़त का पाबन्द बन गया। और फिर सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या में दाख़िल हो कर हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म का मुरीद भी बन गया। रब तबा-र-क व तआ़ला के फ़ज़्लो करम से नेक आ'माल का ऐसा ज़ेहन मिला कि कमो बेश 63 से ज़ाइद म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल की कोशिश जारी है।

मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ रसाइल कसरत से पढ़ने की आदत बन गई और ए'तिकाफ़ का एक बड़ा इन्आम येह मिला कि **मैं जो मिलावट वाले मिर्च मसा-लह़ा की सपलाय का सिन्ध भर में गुनाहों भरा काम** ÜÙÚ¼¢%¢¢±¢ã ¼ÜÙÜÙ ḑ ² ¢J मेरे मसा-लह़े के कारख़ाने में तक़रीबन 44 मुलाज़िम काम करते थे, मैं ने वोह कारख़ाना ही ख़त्म कर दिया क्यूं कि दौर बड़ा नाज़ुक है, बड़े पैमाने पर ख़ालिस मसा-लह़े का कारोबार करने की ख़ातिर बाज़ार में जाना निहायत ही दुश्वार है, आजकल मुसल्मानों की सिह़्ह़त की किस को पड़ी है बस यार लोगों को दौलत चाहिये ख़्वाह वोह ह़लाल हो या معاذاللہ ह़राम। बहर ह़ाल आशिक़ाने रसूल की सोह़बत की ब-र-कत से मैं रिज़्क़े ह़लाल के ह़ुसूल में मश्ग़ूल हो गया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से इशराक़ व चाश्त, अव्वाबीन और तहज्जुद के नवाफ़िल के साथ साथ पहली सफ़ में नमाज़ की भी आदत बन गई।

येह दा'वते इस्लामी के ए'तिकाफ़ की एक बहार है कि एक मिलावट करने वाला शख़्स किस क़दर म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से रिज़्क़े ह़लाल कमाने वाला बन गया और अपना वोह कारोबार ही बन्द कर दिया।

अल्लाह तबा-र-क व तआला हम सब को भी आ'माले सालेह़ करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़ेहरिस्त

याद दाश्त.....3

''सूद और उस का इ़लाज'' के 14 हुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की ''14 निय्यतें''.....4

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत :.....5

ख़ून का दरिया :.....6

भयानक बीमारी :.....6

तीन ख़ुश नसीब बन्दे : 7

क़र्ज़ देने का सवाब : 8

मक़रूज़ पर नरमी से बख़्शिश हो गई :.....8

सारा क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया :.....9

सूद के शुबुहात से बचना :.....11

क़र्ज़ पर नफ़्अ़ लेना सूद है :.....11

क़ुरआने करीम में सूद की हुरमत का बयान.....12

शाने नुज़ूल : 13

तफ़्सीर : 14

अहादीसे मुबा-रका में सूद की हुरमत 15

हलाकत ख़ैज़ सात चीज़ें :.....15

सूद से सारी बस्ती हलाक हो जाती है : 15

सूद से पागल पन फैलता है :.....16

सूदख़ोर के पेट में सांप : 16

सूदी कारोबार में शिर्कत बाइसे ला'नत है :.....17

सूद खाना जैसे अपनी मां से ज़िना करना :.....17

ना आ़क़िबत अन्देश लोग : 18

अस्लाफ़ का अन्दाज़े ह़यात :.....21

बा रौनक़ घर देख कर रो पड़े : 21

दुन्या आख़िरत की तय्यारी के लिये मख़्सूस है :.....21

आह ! सूद ही सूद :.....22

सूदख़ोर को ए'लाने जंग :.....25

सूद की नुहूसत और इस की तबाह कारियां.....27

सूदख़ोर ह़ासिद बन जाता है : 28

सूदख़ोर बे रह़्म हो जाता है :.....28

सूदख़ोर माल का ह़रीस होता है : 29

आग से डरो :.....30

तो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ढील है :.....31

गुनाहों को अच्छा समझना कुफ्र है :...32

इब्रत अंगेज़ कतबा :..32

सूदख़ोर का माल उसे कोई नफ़्अ़ नहीं देता : 35

सूद का अन्जाम कमी पर होता है :..35

ब–र–कत और कसरत में फ़र्क़ :...37

सूदख़ोर मज़्लूम की बद दुआ़ से हलाक हो जाता है : 38

सूदख़ोर ह़कीम की इब्रतनाक मौत :...39

सूद से मईशत बरबाद हो जाती है : 40

जराइम का इज़ाफ़ा :...41

बरोज़े क़ियामत सूदख़ोर की ह़ालत : 42

सूदख़ोर का नफ़्ल क़बूल होगा न कोई फ़र्ज़ : 43

सूदख़ोर की क़ब्र से दहक्ती आग निकलती : 43

ह़लाल व ह़राम की तमीज़ का ख़त्म होना : 45

माले ह़राम से किया गया स–दक़ा मक़्बूल नहीं : 45

ह़राम खाने वाला मुस्तह़िक़े नार है : 46

ह़राम खाने से दुआ़ क़बूल नहीं होती : 46

आह ! नेकियां ख़ाक हो गईं : 48

सूदख़ोर को अज़्दहे ने लपेट लिया : 49

सूद का इलाज : 49
पहला इलाज लम्बी उम्मीदों से कनारा कशी : 49
सामान सो बरस का है पल की ख़बर नहीं : 50
"तूले अमल" के छ हुरूफ़ की निस्बत से लम्बी उम्मीदों के मु–तअ़ल्लिक़ छ फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : 51
दूसरा इलाज दौलते दुन्या से छुटकारा : 54
ह़क़ीक़ी दौलत : 54
ह़लाल पर ह़िसाब और ह़राम पर अ़ज़ाब है : 56
तीसरा इलाज क़नाअ़त : 57
क़नाअ़त येह है : 58
क़नाअत से इ़ज़्ज़त है : 59
लोगों के माल से ना उम्मीद हो जाओ : 59
इन्सान के पेट को मिट्टी ही भर सकती है : 59
क़नाअ़त पसन्द को बादशाहों से क्या काम ? 62
अमीरे अहले सुन्नत की तह़रीर का असर : 63
सूद का चौथा इलाज मौत का तसव्वुर : 65
मौत से ग़फ़्लत का सबब : 66
बांस की झोंपड़ी : 67

मौत से ग़फ़्लत : 68

ग़फ़्लत का अन्जाम : 70

पांचवां इ़लाज सूद से बचने का ह़ीला : 74

कान छेदने का रवाज कब से हुवा ? 75

सूद से बचने की सूरतें : 76

मिलावट वाले कारोबार से तौबा : 83

माख़ज़ व मराजेअ़ : 85

फ़ेहरिस्त : 88

सूद के ख़िलाफ़ जंग जारी रहेगी

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

ब-र-कतों के चोर

सूदख़ोर सूदख़ोर

क़ुफ़्ले मदीना

लगा रहेगा

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ